आत्म-विश्वास, स्फूर्ति, प्रेरणा एवं आशावान कविताओं का संकलन

तिमिर ढलेगा

लेखक

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

तिमिर ढलेगा

TIMIR DHALEGA ***By*** **Suresh Choudhary 'Indu'**

ISBN : 978-81-998530-8-9

प्रकाशक :

शुक्तिका प्रकाशन

माइंडस्टार वेलनेस प्राइवेट लिमिटेड

24, हरिंगटन मेंशन

8, हो ची मिन्ह सारणी, कोलकाता-700071

email : ritzoff@gmail.com

मो. : +91 82409-61596

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

© सर्वाधिकार लेखकाधीन सुरक्षित

मूल्य : 350/-

तृतीय संस्करण : 2026

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

स्व. भोला राम चौधरी

पूज्य पिताजी को समर्पित
यह पुस्तक जिनके आशीर्वाद से
मैं आज इस योग्य हूँ।

—सुरेश चौधरी 'इंदु'

कायर की भाँति देखता क्यूँ, अवसादित मन से
तू है मनुज, संभाल कमान उत्साहित तन से
न स्वीकार हार, हार कर भी असफलताओं से
साहसी, धैर्यवान ही पाते मंजिल लगन से॥

—सुरेश चौधरी 'इंदु'

वरदे,
वीणा वादिनी वर दे!
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नव
भारत में भर दे!
काट अन्ध ऊर् के बन्धन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर
जग-मग जग कर दे!
नव गति नव लय ताल छंद नव
नवल कंठ नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहंग वृन्द को
नव पर,
नव स्वर दे
वीणा वादिनी वर दे!

तृतीय संस्करण

मन की बात

प्रिय सहृदय मित्रों,

किसी पुस्तक का पुनः-पुनः प्रकाशित होना केवल पाठकीय स्वीकृति का संकेत नहीं होता, वह लेखक और पाठक के बीच बने उस मौन संवाद की पुष्टि भी होता है, जो समय के साथ और अधिक गहन होता चला जाता है। '**तिमिर ढलेगा**' का **तृतीय संस्करण** उसी विश्वास और आत्मीयता का परिणाम है।

यह पुस्तक मेरी रचनात्मक यात्रा की आरंभिक कृति रही है। समय के प्रवाह में जीवन और साहित्य—दोनों के अनेक अनुभव इससे जुड़े। प्रथम संस्करण से लेकर द्वितीय संस्करण तक आते-आते मैंने न केवल रचनात्मक परिपक्वता अर्जित की, बल्कि जीवन को देखने की दृष्टि भी और अधिक व्यापक हुई। उसी परिपक्व दृष्टि के आलोक में यह तृतीय संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

इस संस्करण में रचनाओं के मूल भाव और आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए भाषा, प्रवाह और छंद की दृष्टि से पुनः सावधानीपूर्वक परीक्षण किया गया है। जहाँ आवश्यक लगा, वहाँ सूक्ष्म परिमार्जन किया गया है, किंतु किसी भी कविता की संवेदना से कोई समझौता नहीं किया गया। यह पुस्तक अब पूर्णतः मेरी अपनी काव्य-यात्रा का दर्पण है।

'**तिमिर ढलेगा**' निराशा के विरुद्ध एक विश्वास-वाक्य है। यह पुस्तक अंधकार से संघर्ष नहीं करती, बल्कि यह स्मरण कराती है कि अंधकार का स्वभाव ही क्षणिक है। मनुष्य तब अवसादित

होता है, जब वह अनिष्ट की आशंका में जीने लगता है। जिस क्षण वह अनिवार्य को स्वीकार कर लेता है—मृत्यु को सत्य और जीवन को एक यात्रा मान लेता है—उसी क्षण उसके भीतर उजाले का संचार होने लगता है। यह शरीर वस्त्र है और परिवर्तन उसका स्वभाव।

भारतीय दर्शन ने जीवन को कभी केवल पीड़ा की दृष्टि से नहीं देखा। उसने प्रत्येक संध्या के भीतर नव-भोर की संभावना को पहचाना है। यही भाव इस पुस्तक की प्रत्येक कविता में अंतर्निहित है—कि तिमिर चाहे जितना गहन हो, अंततः उसे ढलना ही है।

द्वितीय संस्करण के बाद का समय मेरी साहित्यिक साधना के लिए विशेष रूप से अर्थपूर्ण रहा है। लेखन की यात्रा अब केवल अभिव्यक्ति नहीं रही, वह आत्मान्वेषण और उत्तरदायित्व का साधन बन चुकी है। अनेक पुस्तकों का सृजन और कई रचनाओं का निर्माण-क्रम में होना, इसी सतत साधना का प्रमाण है।

मेरा विश्वास है कि '**तिमिर ढलेगा**' का यह तृतीय संस्करण आज के समय के पाठक से और अधिक गहराई से संवाद करेगा। यदि यह पुस्तक किसी एक मन में भी आशा का दीप जला सके, किसी एक हृदय के अंधकार को थोड़ा-सा भी आलोकित कर सके, तो मेरी रचनात्मक यात्रा सार्थक मानी जाएगी।

आप सभी सहृदय पाठकों के स्नेह, विश्वास और निरंतर साथ के लिए हृदय से कृतज्ञता।

नमन!

आपका

—सुरेश चौधरी 'इंदु'

माघ पूर्णिमा 2082

अनुक्रमणिका

1.	तिमिर ढलेगा...	13
2.	धीर पथिक तू तो डिगना मत	14
3.	प्रारंभ से अंत तक	15
4.	अवसादित मन	16
5.	हार	17
6.	मयूरपंखी स्पर्श-हृदय स्पंदित करती चेतना	18
7.	जीवन-रहस्य	19
8.	हार नहीं तू असफलताओं के झंझावातों से	20
9.	ध्येय प्राप्ति	21
10.	संतोष	22
11.	मन की शान्ति	23
12.	मेरे सपने	24
13.	भक्ति-रस से करो आज पूरित	25
14.	मेरे अंतस के भाव	26
15.	शब्द	27
16.	शीतल मन	28
17.	संजोये रख सपने	29
18.	अनुभूति	30
19.	अन्धकार अनंत हो	31
20.	आत्म-विश्वास	32
21.	आशेय	33
22.	आह	34
23.	उत्साह-शौर्य	35
24.	कायर वही जो, देख बहुतता कार्य की, भाग जाते	36
25.	कुछ तम कम यहाँ भी हो	37

26. क्यूँ अपरिचित है आज मेरा अपना ही साया 38
27. चीर मेघ-हृदय आ रही रवि-रश्मियाँ 39
28. जीवन 40
29. तारों के दीप नहीं बुझते 41
30. तेरी सोच ही तेरा अस्तित्व 42
31. पगडंडियाँ 44
32. प्रसन्नता 45
33. प्रेम 46
34. बंद कमरे के अंधेरों में 47
35. बुझते नहीं देखा दीपों को हो समर्पित 48
36. फिर दीप न बुझे कभी 49
37. एक नयी सुबह हो चुकी थी 50
38. संभावनाएं 51
39. परिंदों से ऊँची उड़ान के हौसले लिए 54
40. दिवस का अवसान हो रहा है 56
41. अँधेरे कमरे सी जिंदगी 57
42. अभिलाषा 58
43. अभिव्यक्ति 59
44. अभी तो चाँद हैं आसमान पर 60
45. आत्म पीड़ा.... 61
46. आत्म-मंथन 63
47. आवेश में दूरियां बढ़ती हैं 64
48. उत्कृष्ट प्रेरणा का माप दंड है जीवन 66
49. उत्साह 67
50. एक छोटा सा रौशन दीया 69
51. एक दिन 70
52. ऐसा क्यों है? 71
53. काल के अंतराल में बदलाव नहीं होते 72

54.	पतझड़ का मौसम	73
55.	मौसम का असर	74
56.	चक्षु-जल बह जाने दो	75
57.	दीप सतत तू जल दीप प्रबल तू जल	77
58.	चाहता हूँ	78
59.	चींटियाँ	79
60.	जाड़े की धूप	80
61.	जियो छोटी छोटी मुस्कराहटों में	81
62.	दूर कर दुर्बल कामनाएं अवांछित	83
63.	जीवन-पथ	84
64.	जीवन की सच्चाई	85
65.	जीवन में कुछ अनुशासन रहना ही चाहिए	87
66.	तमस-रजनी-अन्धकार	88
67.	देख रहा दूर दीप-रश्मियाँ	89
68.	कुछ कर के दिखाओ	92
69.	न भूले व्यथा की जलन को	93
70.	परिवर्तन	94
71.	परिस्थितियां	96
72.	प्रखर ज्योति-पथ प्रत्यक्ष	98
73.	आ अब बढ़ चलें	99
74.	बूँद बूँद सागर...	101
75.	बूँद	103
76.	भूत-भविष्य-वर्तमान	104
77.	भूल जा भूल अपनी	106
78.	भूल	107
79.	मेरी डगरिया	109
80.	भोर के उजाले का इंतज़ार है	110
81.	रात उतर रही थी	111

82. रेत की आकृतियाँ 112
83. लकीरें 114
84. टूटे रिश्ते 115
85. शाद्वल 116
86. शिव को पुनः नील-कंठ बनाना होगा 117
87. शून्य से शून्य तक 118
88. सत्यता परा-जगत की 120
89. सम्बन्ध 121
90. हर दूसरा दिन 123
91. सीख 124
92. हृदय के वातायन तो खुल गए 125
93. हरो दुर्योधनों के प्राण 126
94. उधार के सपने 128
95. बैलगाड़ी 129
96. कबीर के ढाई आखर 130
97. दिल कहे वह है परेशां-परेशां 131
98. रिश्ते 132
99. मैं दीवाना, मैं प्यार निभाता चला 134
100. जीवन के दिन बीत रहे 135
101. मेरा जीवन सूखे पत्ते सा... 136
102. सागर के निकट रहें तो भी, बुझती नहीं प्यास 137
103. आओ आज टूटे सपनों को ढूंढ़ते चलें 138
104. जरा मुस्कुराइये ग़मों को भूल जाइये 139
105. आह्लादित करने हृदय-दीया है तैयार 140
106. कवि परिचय 141

❖✵❖

1. तिमिर ढलेगा...

उमड़ घुमड़ कर काले बादल, देख निराशा के आएंगे
दुख तो होगा ही जब अपने, स्वयं पराये हो जायेंगे
हृदय होगी बैचेनी और, अँधेरा छायेगा चक्षु पर
तब पथ भूल न जाना अपना, करनी होगी पार यह डगर
तिमिर ढलेगा दीप जलेगा, स्वयं तुम्हारे अंतस अंदर॥

पथिक पंथ पर क्यूँ ना आयें, चाहे कितनी भी बाधाएं
हृदय दुर्बलता भी सताए, हर पल मन चिंतित घबराये
कांटे तो बिखरे ही होंगे, दुर्गम दुःसह जीवन पथ पर
भूलकर इन कठिन राहों को, हो निडर चलाचल तू तत्पर
तिमिर ढलेगा दीप जलेगा, स्वयं तुम्हारे अंतस अंदर॥

मन तो निराश होता ही है, जब देखे निरंतर विफलता
टूटे जब अपने सपने तो, आती है मन में कायरता
गीता का देश दे उपदेश, राही कर्म करो जीवन भर
चलना है तुम्हें अग्नि पथ पर, उठ चलो निराशा से ऊपर
तिमिर ढलेगा दीप जलेगा, स्वयं तुम्हारे अंतस अंदर॥

आ बढ़े चलो नयी राह पर, स्वछन्द खग बन गगन चूम लो
सीख दृढ़ता स्वर्णिम धरा से, नाप नाप तुम इसे घूम लो
कर आशा क्षितिज़ से मिलन की, उतार दो नभ को अवनी पर
स्वप्निल कल्पना का कर मनन, उज्जवल भविष्य का स्वागत कर
तिमिर ढलेगा दीप जलेगा, स्वयं तुम्हारे अंतस अंदर॥

❖

2. धीर पथिक तू तो डिगना मत

रवि-उदय कभी रुक न सकेगा, वारिद के अम्बारों से
धीर पथिक तू तो डिगना मत, राह बिछे अंगारों से॥

शीतल शशि प्रभा कभी देखी, आती तूने सितारों से
बनो कीर्तिवान-यशस्वी तुम, दृढ़ बनों निज विचारों से॥

धीर पथिक तू तो डिगना मत, राह बिछे अंगारों से॥

तू भारत निज-स्वार्थ छोड़ कर, रह परमार्थी भावों में
तू मानव श्रेष्ठ मनन कर कर, रह दीनों की आहों में
यश मिलेगा नहीं धनार्जन से, बल्कि मिलेगा चाहों में
निकल माया से करो सेवा, रुको न बंधन तारों से॥

धीर पथिक तू तो डिगना मत, राह बिछे अंगारों से॥

चरितार्थ निज प्रत्युपमान कर, लक्ष्य ऊँचा बनाना है
आ तू चक्रवात से लड़ जा, जीव उत्कर्ष लाना है
प्रेम-मय मनुज तुम उठ जागो, अब संघर्ष कराना है
रवि-उदय कभी रुक न सकेगा, वारिद के अम्बारों से॥

धीर पथिक तू तो डिगना मत, राह बिछे अंगारों से॥

❖

3. प्रारंभ से अंत तक

प्रारंभ से अंत तक जीवन ध्येय को ही ढोया
उत्पीड़न संप्रेषित हुआ अभितज्य बन खोया
निष्कर्ष संवेदन शील था 'इंदु' खोजता रहा
शून्य से प्रारंभ हो शून्य पर पहुँच खूब रोया॥

शून्य से शून्य प्रारम्भ से अंत तक धरा तुल्य
मिले कंटीले मार्ग मिली फूलों की सेज अमूल्य
रेत पर लिखी जिंदगी धुल गई आती लहरों से
टेढ़ी-मेढ़ी डगर थी, था आशा का बाहुल्य॥

आग-ग्लानि-वितृष्ण, विलीन होता कल्माष धुंआ
प्रारंभ से अब तक की यात्रा निष्कर्ष क्या हुआ
अवलोकित भूत क्या संघर्ष और सिर्फ संघर्ष
अवनी से व्योम तक उड़ा फिर भी जीवन न छुआ॥

ढोल बजाएं खुशियाँ मनाएं सांध्य बेला है,
दिवस का अवसान है, अर्घ पूजना अकेला है
नव जीवन प्रारंभ होगा व्योम में नाद होगा
सिंचित जीवन का नवालम्ब अनुपम खेला है॥

❖

4. अवसादित मन

सघन नंदन वन के कानन में सुमधुरित छटा
श्याम व्योम पर आच्छादित काली मेघ घटा
धरा की उत्पत्ति का अनुप्रेषित कालजयी रव
रक्ताभ बाल तरणि मध्य पक्षियों का कलरव॥

अनुबंधित मधुमय अंतस का प्रेरणा स्रोत
प्रकृति द्वारा प्रज्ज्वलित करुणामयी ज्योत
प्रांजल रति दृश्यमान होती मुक्त गगन में
ध्वांतमणि प्रभा झिलमिलाती मन कानन में॥

निसर्ग के इस उत्कृष्ट प्रांगण में एक था दीया
ज्योतिर्मय अंतस कर रहा वह प्रेमिल दीया
अवसादित जब जब हृदय होता देख संसार
आल्हादित करने हृदय दिया होता तैयार॥

झंझा से डगमगा सकती अवश्य यह ज्योत
सबल संकल्प हो भावनाओं से ओतपोत
अंतराल की आंधी मिटा नहीं सकती इसे
आनंदप्रद सर्ग का संबल मिला हो जिसे॥

आकांक्षा कामना और संस्कार का संयोग
स्थापित हृदय मध्य उसे होता नहीं वियोग
नागफनी के शूल भी आडंबर से प्रतीत
प्रसन्न रहो यद्यपि उर हो घटा से बाधित॥

मार्ग हो शूल आच्छादित और हो तिमिर गहन
पग-पग अति संकीर्ण धरा उगले अनल तपन
व्योम के भाल से निशिकर उर्जा कर संचित
प्रफुल्लित तन प्रशांत मन बाधा न हो किंचित॥

❖

5. हार

असफलता से हार कर हार नहीं हार की भावना से
हार गया जो मन से तो हार जाये संभावना से
जय पराजय तो जीवन संघर्ष के फल द्वय होते हैं
एक क्षण ख़ुशी का जाए तो आये दूसरे आशा के॥

पराजय को शक्ति बनाता जो जीवन समर में उतरता
हो न अब तू विचलित, ले धरा सी अदम्य सहनशीलता
क्या खोया क्या पाया सोच कर मत रह तरंग सा गर्जित
तिमिर को दे चुनौती जला दीप उत्साह का चमकता॥

धैर्य रखना चाहिए आघात से पहचान युग की चाल
व्याकुल तो होता निराश मन पराजय से हो बेहाल
भावना में बह कर न सोच उथल-पुथल हो रहे मन से
मौन मौन दूर मन में देख दीप शिखा जले विकराल॥

मनोबल दृढ़ हो तो नहीं हरा सकती कोई भी हार
विजय-पथ पर चलना है अब तुझे भूल विगत की हार
मार्ग तुझे अपना स्वयं तय करना होगा निश्चित है
बन साहसी, उठ अब, रणभूमि तेरी यह जीवन संसार॥

❖

6. मयूरपंखी स्पर्श-हृदय स्पंदित करती चेतना

मयूरपंखी स्पर्श हृदय स्पंदित करे चेतना
मनोभावों को प्रकट करे ये व्यथित संवेदना।
सभी को तिरोहित कर, बढ़ता चले तू निरंतर
ध्येय-लक्ष्य निर्धारित कर, चल सुपथ पर अग्रसर॥

हो हर पग ख़ुशी से भरपूर, पग प्रेरणा का
हो न कोई संशय, न हो कोई अवसादित पल।
प्रफुल्लता-उमंग से बढ़ाता जा जीवन डगर
मन शांत होगा, प्रशांत पथ होगा प्रति क्षण सफल॥

यह पथ तो है कंटक आच्छादित, सफ़र है कठिन
मुस्करा चलते रहो तो शूल भी हों जाय फूल।
नियति का नियम अनोखा आती है स्वर्णिम सुबह
काली अंधियारी रात के बाद, विगत को भूल॥

कर्मशील बन, धीर बन, जो जीवन पथ करे तय
तय होगा प्राप्त ध्येय, पायेगा निश्चय ही लक्ष्य।
पथ तय करना ही होगा रो कर या हंस कर
छोटा लगता मार्ग कठिन, मगर मन हो सुखमय॥

❖

7. जीवन-रहस्य

समस्याएं दूर होती अपने आप, जब अंतस होता उद्दीप्त
बहुमुखी आयाम प्राप्त होता विचारों के होने से संतुलित।

चेतना एवं मस्तिष्क को वश में रखना भी है एक तपोबल
नियोजित होते ये भी कर अभ्यास और कर दृढ़ मनोबल।

हो मित्र स्वयं तुम खुद के, हो अगर वश में मस्तिष्क-मन
चलायमान-अस्थिर मनःस्थिति शत्रु-सम, करती शोषण।

अटल सुख औ चिर शांति प्राप्ति हेतु कर अंतर्मन स्थिर
नहीं स्थिर भोग सांसारिक, न पहुँच में सच्चाई आतंरिक।

बनकर ज्ञानी, रह स्थिर-प्रज्ञ जीवन की परिस्थितियों में
बना संतुलन जीवन का, सुखमय हो निज-कठिनाइयों में।

यही है रहस्य जीवन का, जान इसे, कर निलंबन समस्याएं
जीवन अटल-मूल्यवान-प्राप्त कर विश्वास, हर हर विपदाएं।

❖

8. हार नहीं तू असफलताओं के झंझावातों से

हार नहीं तू असफलताओं के झंझावातों से कभी
नभ होगा शांत, अपने प्रयत्न से पायेगा लक्ष्य भी।
देख भगवान भुवन भास्कर, देता प्रकाश सदा
बदरिया तो आती जाती, चिरता तिमिर सर्वदा॥

कर्म निरंतर करता, कर्म से पीछे हटता वो नहीं
प्रतिदिन नियम से, उदित होना भूलता वो नहीं।
श्रद्धा भी सूरज की भांति पूजनीय, तपती है सदा
विश्वास तो है चन्द्र-रश्मियाँ घटती-बढ़ती है सदा॥

भटक रही श्रद्धा मन से, अब उसे लाना होगा
पंथ विशेष खोज, मनुज को उधर जाना होगा।
मन श्रद्धा रहित करता अनिश्चित अविश्वास
कर अनन्त श्रद्धा, ला तू जीवन-अभिलाष॥

निर्भय बन, श्रद्धा ला, हटा जीवन भय-त्राश
असफल बनाता भय, रोक तेरे सकल प्रयास।
भय-हीन हुए सफल महान, कर कर्म कठिन
कर्म के प्रति रखी जिसने भी श्रद्धा सदा नवीन॥

सफलता एक तुलनात्मक व्याख्या जीवन की
सफल है तू यदि सफल सोच तेरी निज मन की।
हार नहीं तू असफलताओं के झंझावातों से कभी
नभ होगा शांत, अपने प्रयत्न से पायेगा लक्ष्य भी॥

❖

9. ध्येय प्राप्ति

सन्निकट जलधि के रहें तो भी नहीं बुझती प्यास
गगन मध्य विचरते वारिद की बूंदों से होती आस
अभिमान करते वे जुगनुओं की आभा पाकर पास
पा न पायेंगे कभी निज ध्येय, जो है चन्द्र-प्रकाश।

दिशा हीन भटक रहे, ढूंढ़ रहे झूठी आशाओं में अर्श
सार्थक जीना तभी है जब तक करते जीवन उत्कर्ष
बीच मार्ग से मुख नहीं मोड़ते, निरंतर करते संघर्ष
निश्चय पाते मंजिल, होता वैसा जीवन एक आदर्श।

निरंतर गतिशील बनो चाहे कितने भी हो बिछे शूल
शूल भी फूल बन जायेंगे, यदि विचार हो ध्येयानुकुल
ज्यों वारिद बूँदें खोज लाती मोती, सागर में जा घुल
सकारात्मक बने रहो, बढ़े चलो, कठिनाइयों को भूल।

कर्म करते रहना तो है धर्म बतलाया श्री कृष्ण ने भी
विषम परीक्षाएं देनी होती है पाने को निज लक्ष्य भी
अंतस में बैठे अज्ञान के अंध को करना होगा दूर भी
हारी हर बाजी को पलटने पर करना होगा मजबूर भी।

❖

10. संतोष

जिसने सीख लिया मुस्कानों का दीप जलाना
मानो उसने सीख लिया जीवन गीत सुनाना।

मुस्काता वही है जीवन जिसका संतुष्ट हो
खुश रहो निज कर्म से, प्राप्त से कभी न रुष्ट हो।

कामना और अभिलाषा करती असंतोष है
दुर्बल आत्म-शक्ति करे सर्वाधिक मन दोष है।

निज बल को सुदृढ़ बना लेकर संतोष धन सदा
अन्यथा शक्ति क्षीण हो जाए, जल से अगन सदा।

सुधिजन रहते सदा खुश पाकर उसे जो भी मिला
निरंतर वृद्धि होती सुख की, रख न शिकवा-गिला।

दे कर्मफल संतोष शुचिता सुन्दर चरित्र है
संतोष पा रुकता प्रगति यात्रा हेतु चित्र है।

❖

11. मन की शान्ति

झांक झरोखे से देख रहा
समक्ष वृक्ष-शाखाओं को
देख रहा शाखाओं पर आयी
श्वेत पुष्प-लताओं को

सुरभित कर रही मंद-मंद
सुगंध भोर की हवाओं को
झंकृत कर रही पपीहे की
मधुर कुहू-कुहू फिजाओं को

देख मनोरम दृश्य और उड़ते
स्वतंत्र खगों की पांत
आशाओं के सागर में लहर
लहर हो गया मन-शांत

खिलते फूल, उड़ते पाखी
मनोरम इन्द्रधनुषी आकृति
सीखना तो इनसे सीखो कैसे
मन शांत करती प्रकृति

❖

12. मेरे सपने

बचपन से देखे कुछ सपने,
सुनहरे भविष्य के सपने,
तारों से सुसज्जित आसमां से,
पर्वत की ऊँचाई से सपने,
झील की गहराई से सपने॥
अन्तस में अंकित हरियाले,
छू चन्द्रमा को पाने वाले,
अम्बुधि की अनंत जलराशि से,
दृग मध्य आशा पाले,
उन्मुक्त नभ पर मुक्त विहग से उड़ने वाले,
अभि संचरित तरंगों वाले,
प्रफुल्लित उमंगों वाले,
आनंद ही आनंद डाले,
मेरे स्वछन्द सपने,
मेरे ये सजीले सपने,
नयन बीच रसीले सपने॥
आत्म-शक्ति से भरपूर,
चले पंथ विशेष पर,
करने साकार सपने
ये प्राप्त सपने,
नयनों में उत्सुकता लिए,
पुलकित मन को किये,
हरित तन को किये,
ये बचपन के सपने,
नमन तुम्हें सुनहरे सपने॥

❖

13. भक्ति-रस से करो आज पूरित

पथिक बना फिर रहा जीवन में
मार्ग तय किया, थे अनेकों शूल
नाविक बना पार लगाई ये नैया
डोल रही थी लहरों के प्रतिकूल॥

मैं तो वृक्ष नीम का कड़वा अति
आ चन्दन-संसर्ग हुआ सुरभित
भूल मूल प्रभाव, स्मरण मात्र से
जीवन ध्येय हुआ अब परिवर्तित॥

हे दयामय-गुणातीत-दीनबंधु प्रभु
सब गुणों के अंश का दे आशीर्वाद
कष्ट हरे, पथ प्रदर्शक-तारक बनें
भक्ति संकल्प रहे सदा निर्विवाद॥

विकल्प रहित संकल्प है अर्पित
चरणों में रहूँ सदा तेरे समर्पित
ह्रदय पात्र ले आया रसालय में
भक्ति-रस से करो आज पूरित॥

❖

14. मेरे अंतस के भाव

विचारों की कुटिया एक मन मध्य बनाया
आशाओं का दीप एक प्रज्वलित कराया
कल्पना के पुष्प से मैंने बहुत सजाया
सुन्दर से हृदय की सुन्दर ये प्रेम कुटीर
प्रभूत मोहक, प्रफुल्लित, प्रिय अनंत प्राचीर॥

मन आलोड़ित था सपन थे सजे हुए बहुत
नव दिवस नव विचारों से था मैं अभिभूत
मंगल मय भविष्य, भावनाएं थी अद्भुत
नभ के मेघ भी पहुँचा रहे शीतल समीर
ध्यान था शांत-चित्त विचार बना रहे धीर॥

चिंतन-मनन में मग्न, था क्यूँ मन कटा कटा
अब कहाँ से आयी ये श्याम घनघोर घटा
क्षण भर में बदल गयी, झंझावात में छटा
हवा हुई वेगवान, जल बरसा गगन चीर
सम्प्रेदन अंतस में हुआ चित हुआ अधीर॥

स्पंदित मन हुआ कम्पित हुई लौ दीये की
तभी झंझावत ने बुझाई लौ दीये की
तमस विचारों में किया ये तूफान अविवेकी
प्रिय मेरे अंध न देख मन में, हो न अधीर
विचार हो गए आलोकित, बना कर्मवीर॥

छोटे से दीप ने प्रकाशित किया विचारों को अल्प समय में
एक किरण आशा की मनोबल बढ़ा हौसला देती भय में
निर्बल जान सबल तूफान ने दीपशिखा का किया था पात
उसे क्या मालूम, दीये की रोशनी कर चुकी थी उल्कापात॥

❖

15. शब्द

शब्द की दुनिया में, मैं खो कर रह गया
गूंज इतनी की अशांत होकर रह गया।
शब्द ही प्रेमानुराग तो बिखेरे जा रहे थे
कटु स्मृति भी शब्द ही दिए जा रहे थे।

शब्दों से ही रचे थे महाभारत युद्ध महान
कटुता से कहा, सत्य भी करता परेशान।
शब्द इतने कठोर, चुभते बन हृदय शूल
असमय कहे कटु शब्द होते है प्रतिकूल।

वाणी की मिठास शब्दों के बुनती जाल
हृदयंगम कर वशीभूत करती अरि-चाल।
पाषाण होता जा रहा, बोल रहा कटु शब्द
सीख भ्रमर के गुंजन से, जो प्रेमिल निःशब्द।

झर-झर झरते झरने बिखेरते मीठी तान
फ़र-फ़र उड़ते पाखी करते कलरव गान।
शब्दों का यह कोलाहल डाल रहा दुविधा
मनुष्य ढूंढ़ रहा मन शांत करने की विधा।

शब्द रचो तो रचो ऐसा, मिटे मन का क्लेश
परिवर्तित हो उन्मन मन, हटे समस्त उर-द्वेष॥

❖

16. शीतल मन

अद्भुत शान्त शीतल मन,
आज क्या क्या बात बताए।
मार्तण्ड-उष्णता को ज्यों,
रोक रही घनघोर घटायें।

प्रचंड वायु वेग को जैसे,
छान रही सघन वृक्ष लताएँ।
अंतराल में अंतस झांक रहा,
भूल अतीत की सारी चिंताएं।

प्रवाहित है नव-उमंग, नव-उत्साह,
नव-कामना, नव-भावना और आशाएं।
हृदय शीतल, चित्त-शीतल, मन-शीतल,
और बह रही शीतल पीयूष धाराएँ।

चन्द्र-कला सी बढ़ती-घटती मनोदशा,
ठौर पा प्रसन्न मंद-मंद मुस्काएं।
छोड़ अतीत भविष्य के समक्ष,
मन वर्तमान में जीता जाये॥

❖

17. संजोये रख सपने

स्वप्न पूरित नयन में तैरती तरल कल्पनाएँ,
जग मुट्ठी में कर लेने की थी मन भावनाएं।
जीवन पथ अग्रसर भी था लक्ष्य प्राप्ति की ओर
अन्तर्निहित आशाओं से समृद्ध हृदय विभोर॥

अन्धकार की आँधी उठी क्षितिज से वेगवान
स्वप्न धाराशायी हुए विह्वल मन था बलवान।
उत्कर्ष पर जो हम थे हुए अक्समात गति हीन
वैभव छुटा स्वजन छुटे हुआ मुख मंडल मलिन॥

उन्नति का आरोहण मन श्रांति नहीं, था उद्वेग
निज स्वप्नाच्छादित लक्ष्य सदा बढ़ाते विवेक।
सपने उधार के देखें तो ढहते उद्दंड द्रुम सम
तृण की भांति रहने वाले करें पार मार्ग विषम॥

नारी श्रृंगार कर नहीं सकते कभी बासी फूल
उधार के सपने होते नहीं आकांक्षा अनुकूल।
गगन छूने के सपने पूरे होते नहीं पतंगों से
लेने दो उड़ान निज सपनों को भर उमंगों से॥

स्निग्ध रजनी की रूप छटा में बेसुध होकर
भूल गया था उज्जवलित सपनों का ये हार।
काल के अंतराल में सुसज्जित विश्वास लिए भी
अनल बरसते जीवन में, सिंचित नभधार लिए भी॥

अतीत की भंवर पिपासा, भविष्य जिज्ञासा से
सपने ये साकार शशि-प्रभा की शीतलता से।
आतप, उन्मत्त, उन्मन, व्याकुल मन का संताप,
स्वर्णिम सपनों को सजाना है हर के त्रय ताप॥

❖

18. अनुभूति

मन व्यथित था सोच गत बातों को वक्त ठहर गया
जीवन की हर अंगड़ाई देखि भाग्य रूठ किधर गया।

नज़रें लगाये निहार रहा था मचलती लहरों को
न जाने कब ये सारा सागर ही हृदय में उतर गया।

झुकी झुकी हुई पलकें गम आँखों में तैर रहा था
वेदना प्रगट हुए बिना ही आँखों में जल भर गया।

रात ठंडी हवाओं का अहसास होता रहा मुझे
भोर हुई तो धूप को देखा और तपिश से डर गया।

ख्वाब तो ख्वाब थे 'इंदु' आते थे ये सदा की तरह
मुलाकात उनसे हुई जीने का तरीका संवर गया।

❖

19. अन्धकार अनंत हो

अन्धकार अवश्य अनंत हो,
समस्याएं अधिक ज्वलंत हो,
दिशा-हीन भटक रहा तू क्यूँ इस मार्ग में,
खोज राह, यह विशेष निज मन की आग में।

विष वमन, सुधा सिन्धु पान कर,
काट अंध-उर के, विहान कर,
शक्ति ला, पार कर जोर के इस बहाव को,
सक्षम है तू, हरने में मन के तनाव को।

चंचल-मन की तेज़ धार हो,
गिरती-उठती बार-बार हो,
कागज़ की पतवार लगा नहीं सकती पार
बीच भंवर से निकलना है तुझे लगातार।

प्रफुल्लित-पुनीत भावना हो,
आनंदित अनन्त साधना हो,
झेल सकता ऐ साहसी तू ये आंधिया
अपने दुर्भाग्य पर बरस, बन अब बिजलियाँ।

❖

20. आत्म-विश्वास

तू नहीं मानव सामान्य,
मत जी भावना एवं कल्पित आशाओं में,

बढ़ता जा, निज-लक्ष्य बना
बह जा आत्म-विश्वास की प्रबल धाराओं में,

नींव विश्वास की डाल,
फंसना मत मार्ग की विकट-जटिल बाधाओं में,

रख दृष्टि तुम्हारी तुम पर
मत देख निज को औरों की सफलताओं में,

डर-भय दुश्मन तेरे पास
रिपु को जला डाल आत्म-अग्नि की शिखाओं में,

श्रेष्ठ समझ अपने मन को
घबरा नहीं किसी भी विषम अवस्थाओं में,

हार न मान, रुक न तू
पानी है सफलता, चल इन नयी राहों में॥

❖

21. आशेय

भाव निर्झर निष्पादित होते जब उद्देश्यहीन
एकाकार हो मनुज विघटित होता प्रभु अधीन
नियति निर्धारित होती है आशेय पर तदापि
कल्मष प्रयोजन में हो भाग्य साथ न दे कदापि।

उत्कर्ष हो नियत तो उत्कृष्ट होते उद्देश्य
संवेदना के स्वर समुच्चय रूपेण होते प्रेष्य
ओछी नियत के लबालब कटोरे को करो रिक्त
मानसिकता जागृत कर प्रेमानुभाव से हो सिक्त।

आराध्य भाव समाहित अर्चन वर्चस्व सिंचित
उत्कर्ष मार्ग के प्रणेता कर लक्ष्य निर्धारित
नियत विशेष दें, प्रभूत सन्देश दें, आदेश दें
अपूर्ण कार्य पूर्ण हो पूर्णता प्राप्ति का निर्देश दें।

❖

22. आह

आह जब सब सीमाएं पार कर उद्वेलित हो जाती है
अज्ञात चेतना भी सार्थक हो जब संकुचित हो जाती है
होता है संघर्ष मानव कर्म की मूल अधारशिला तब
अंतसवेदना मनोभाव की स्वतः प्रवाहित हो जाती है।

जीवन समर वृष्टि का घन-नाद तो होता है दुःराग्रही
उल्कापात हो करका निपात हो, होता है पूर्वाग्रही
संसाधन तो सीमित हों और मन विचलित होता बार बार
अत्यधिक सम्प्रेषण की स्थिति में यह होता है अनुग्रही।

विषम परिस्थितियां हैं तो समझौता करना ही पड़ता है
कभी कभी शूल भरे मार्ग पर भी चलना ही पड़ता है
श्रेष्ठ नर वही होता जो जीवन समर में लेता दृढ़ निश्चय
लक्ष्य कर निर्धारित चले तो यह मार्ग सरल ही लगता है।

हार कर विफलताओं से विचलित जो व्यक्ति हो जाते हैं
निराशा अवसाद के मेघ में घिर घिर शक्ति खो जाते हैं
परिवर्तनशील जग में चेतस व्यक्तित्व को निखारो अब
अन्तरंग वेदना भूल मुस्कान अनुरक्ति बो जाते हैं॥

❖

23. उत्साह-शौर्य

गरज रहे जो जल-विहीन मेघों की भांति कहीं
वे कदापि भी कहलाते उत्साह-शूर नहीं
शूर वही जो पुरुषार्थी और चेतस-शील हो
वीर वही जो उत्साही-परमार्थी स्नेहिल हो।

बलहीन-मूढ़ है, जो मानव उत्साह-विहीन है,
कर्म-वीर, चित्त-वीर है जो उत्साह-लीन है,
सर्व सुलभ है जब पौरुष और उत्साह होता
धीरज से लें शिक्षा, जहाँ आत्म-प्रवाह होता।

आत्म-तेज़ हो चुका हो अगर पूर्ण ध्वस्त-त्रस्त,
हो चुका जब पराक्रम सम्पूर्ण अवसाद ग्रस्त,
निश्चित है उसको जीवन में हारा मानो तुम
उत्साह-हीन होते हैं, शोकाकुल जानो तुम।

निकृष्ट होते जो, आती उन पर आपदा घोर
बिगड़ते कार्य सब, लेते खुशियों की काट डोर
सुख वे कभी नहीं पाते, जो होते नहीं शूर,
बन अशोक, उत्साही दीनता को करते दूर।

❖

24. कायर वही जो, देख बहुतता कार्य की, भाग जाते

कायर वही जो, देख बहुतता कार्य की, भाग हैं जाते,
छोड़ धैर्य अपना, आकर दबाव में, हार वे अपनाते।

क्रोध है धारण करते, विवश हो स्वयं पर झुंझलाते,
निराश अपने को करते, अन्य का मन भी तोड़ जाते।

अति क्रोध करने से तो चिंतन-शक्ति का ह्रास होता है
चिंतन रहित सोच से तो बुद्धि का भी विनाश होता है।

हो मन शांत तो, लड़ सकते संकटों से भी अवश्य आप,
कर्मवीर-साहसी बन, पा सकते निश्चय ही लक्ष्य आप।

पृथा सदृश धैर्यवान बन, निज का उत्थान करना होगा,
कर मन को स्थिर, विचलित न हो, तुम्हें ध्यान करना होगा।

अनवरत जल धारा तो चट्टानों को भी चिर जाती है
सतत् प्रयत्नशील रहने से हार पास नहीं आती है।

❖

25. कुछ तम कम यहाँ भी हो

कुछ ऐसा आभास तुम कराओ सखे
बिखरी जिंदगी भी सिमट सिमट जाए
कुछ गम, कम यहाँ भी हों,
कुछ गम, कम वहाँ भी हों।
कुछ ऐसा इतिहास तुम रचाओ सखे
गहराई सागर की सिहर-सिहर जाए,
कुछ सपन, कम यहाँ भी हो,
कुछ सपन, कम वहाँ भी हों।
कुछ ऐसा ध्यान तुम लगाओ सखे
जीवन सफ़र सफल-सफल हो जाए,
कुछ तड़पन, कम यहाँ भी हो,
कुछ तड़पन, कम वहाँ भी हों।
कुछ ऐसा साथ तुम निभाओ सखे
सुरभित हर कदम-कदम हो जाए,
कुछ सुगंध न, कम यहाँ भी हो,
कुछ सुगंध न, कम वहाँ भी हों।
कुछ ऐसा इंतज़ार तुम कराओ सखे
समय का यह चक्र थम थम सा जाये
कुछ कसक, कम यहाँ भी हो
कुछ कसक, कम वहाँ भी हो।
कुछ ऐसा दीप तुम जलाओ सखे
जिंदगी बस रोशन रोशन हो जाये
कुछ तम, कम यहाँ भी हो
कुछ तम, कम वहाँ भी हो।

❖

26. क्यूँ अपरिचित है आज मेरा अपना ही साया

अर्थ था-समर्थ था सभी हुआ करते थे अपने
सभी थे मेरे, देखा करते मेरा बनने के सपने।
अर्थ गया-माया गयी, यूँ मुझे बनाया पराया
क्यूँ अपरिचित है आज मेरा अपना ही साया॥

आज स्वार्थ स्वाभिमान पर भारी पड़ गया
बादलों का रुख पवन से विपरीत हो गया।
सागर की गर्जन तट-बंध को ललकार रही
वेगवान आंधियां वट वृक्ष को यूँ हुंकार रही॥

कंटक-पथ पर जिनके लिए पुष्प बिछाया था
उनका दुःख अपना दुःख समझ मुरझाया था।
स्वयं तो उस पार चले गए क्यूँ मन दुखाया
क्यूँ अपरिचित है आज मेरा अपना ही साया॥

जानते नहीं गगन कभी झुकता नहीं धरा पर
क्षितिज पर मिलन होता है अरुणिमा ला कर।
भोर होते ही अंध हटते ही लौट आता है साया
क्यूँ अपरिचित है आज मेरा अपना ही साया॥

❖

27. चीर मेघ-हृदय आ रही रवि-रश्मियाँ

चीर मेघ-हृदय आ रही रवि-रश्मियाँ
अंतस को करती प्रकाशित ये रश्मियाँ
जल मध्य चांदनी बिखेरती ये रश्मियाँ
नव उमंग-तरंग लहराती ये रवि रश्मियाँ।

करती स्पंदित मन, स्पंदित जल राशियाँ
बालुका राशि चमक रही ज्यूँ स्वर्ण राशियाँ
लाली लिए क्षितिज पर झिलमिलाती रश्मियाँ
सदा रहें प्रफुल्लित देती सन्देश ये रवि-रश्मियाँ॥

❖

28. जीवन

जीवन पथ अति दुर्गम, शूल ही शूल बिखरे हुए यहाँ
ज्यूँ अति भयंकर निनाद करता हुआ सरिता जल प्रपात
ज्यूँ श्याम मेघमय गगन पर हो रहा चंचला निपात।

धीर दृढ़ प्रतिज्ञ साधक तू कर मनः शक्ति की साधना
परिवर्तित कर देते शूल को फूल में ला नव प्रभात
जग विदित है यह आती अरुणिमा गहन रात्रि पश्चात।

सुख दुःख, आशा निराशा के मार्ग पर चलते हैं हम
दिवस के पहर सा जीवन है सुबह दोपहर और रात
सुधा सिन्धु पार कर, काट अंध उर के, सह उल्कापात।

चंचल मन की तीव्र धार, है उठती गिरती बार बार
जीवन भंवर को नहीं कर सकती पार कागज की पात
आनन्द अनन्त पुनीत भावना लिए हर डर अज्ञात।

❖

29. तारों के दीप नहीं बुझते

तारों के दीप नहीं बुझते
हो झंझावात के झोंकों से प्रभावित।
तिमिर को दे रहा चुनौती
आज यह मौन दीप प्रज्वलित।

प्रेयसी के अश्रु सा खामोश
आशाओं में सोता एकांत कम्पित।
भ्रमर सम्होहित आज होते
निस्वार्थ करे उद्यान पुष्प सुरभित।

रत्नाकर ने दिए रत्न अनमोल
करने को विश्व कल्याण सुनिश्चित।
सुने नयनों में छिपी पीड़ा
करती नहीं कभी प्रेम रस बाधित।

धरा की अदम्य सहनशीलता
सिखा रही, होना कभी न विचलित।
क्या खोया-पाया सोच मत
हो सागर-तरंग सा निर्बाध गर्जित।

❖

30. तेरी सोच ही तेरा अस्तित्व

रत्नाकर जल-राशि सी गहन तू अपनी सोच बना
क्यूँ विचर रहा तू बन कर अनवगत सागर किनारे,
अम्बर-पटल-खिला चन्द्र प्रभा, और धरा कर प्रदीप्त
द्युतमान यह पथ हुआ चल तू उजियारे-उजियारे।

पथिक, यह पथ शूल आच्छादित अब समक्ष तुम्हारे
ढूंढ़ मार्ग चलना है अकेला, बिना किसी सहारे,
तूफानों से टकरा, लहर से लड़, धैर्य ही पूंजी
पीछे तेरे तू ही खड़ा, साथ है मन बल महा रे।

भय के साये छाये मन में, दूर इसे भगाना है
आत्म-बल को खूब प्रबल कर, सोच तो सही बना रे,
नाविक निकल चल ले संग अतिसक्त हैं पतवारें
जीवन-भंवर में फँसी है नैया, अब पार इसे लगा रे।

चीर उत्तंग पर्वत शिखर पर नवल क्षीर सरिता बहा
दृढ़ कर भाव हृदय के, क्यूँ सोचे है बस बढ़ता जा,
जीवन है एक अलौकिक झरना, अविरल इसे बहा
डाल इन्द्रधनुषी रंग, जीवन संग मधुर इसे बना।

सदृश संघर्ष है जीवन, ले चुनौती, लड़ संग्राम
कभी न मान हारती कक्ष, भर न सके कोई धन
आलोकित कर जीवन अनमोल खुशियों को संभार।

गगन-वितान उज्जवल राकागण की आभाओं से
देह-वितान को शोभित कर, स्वयं आभा शोभा से,
अस्तित्व निष्कर्ष है, सफल कर्मों के उद्घोष का
सतत नीरव दीप जला, ज्ञान उदित आत्मप्रभा से।

व्यक्तित्व ढूँढ़ता अस्तित्व को निज अंतस सुधा से
अकल्मष भी रहता स्व-कर्मों के गुंजन की थाह से
अति वीर्यवान बनना जग निर्माण हेतु निज भुजा से
मोक्ष योग पायेगा निश्चय जन-कल्याण राह से।

तेरी सोच तेरा अस्तित्व तेरी सोच तेरा मार्ग,
सकारात्मक हो सोच तो निकट होते लक्ष्य हमारे,
तेरी कीर्ति तेरी कृतियाँ, कृति नैसर्गिक सौम्य हो
आदर्श हों ऊँचे तो यश अमर अस्तित्व हमारे॥

❖

31. पगडंडियाँ

चलते रहने का पाठ सीखाती पगडंडियाँ
पास पहुँचाने का फ़र्ज़ निभाती पगडंडियाँ।

दुर्गम वन के झुरमुटों को काट काट कर बनी
निर्दिष्ट लक्ष्य पर हमें पहुंचाती पगडंडियाँ।

अपार सुख सारगर्भित कटु अनुभव यहाँ मिश्रित
तीक्ष्ण अनुभव को है पुनः दर्शाती पगडंडियाँ।

निरंतरता से न होना है कभी मायूस मुझे
निरंतर चलते चलते बन जाती पगडंडियाँ।

जीवन तो है एक पगडण्डी उबड़ खाबड़ सी
जीने की हर राह है बतलाती पगडंडियाँ।

दूर देश से आते प्रेमी को जीवन देने
प्रियतमा के पास उसे पहुंचाती पगडंडियाँ॥

❖

32. प्रसन्नता

जो दुःख हर दूसरों का जीता, वह आते हैं याद मृत्युपरांत
आत्मा उनकी इस लोक भी उस लोक भी, कर परमार्थ होती क्लांत।

अगर सागर मंथन से मिला पीयूष, मोहिनी बने नारायण को
आँचल में सागर के गरल भी था, शिव पिया विश्व कष्ट हरण को।

सुधा-पान कर अमरत्व नहीं होता प्राप्त, कर दीन की सेवा महान,
प्रसन्नता मिलती, पहचान कर, स्वयं का विश्व के प्रति योगदान।

सक्षम बनती वो अनल, जल रही जो तीव्र अभिलाषाओं के मध्य
ये प्रेरक शक्तियां देती खुशियाँ, जब मिलाता हमें अनमोल लक्ष्य।

सुखमय जीवन करती उसकी उदारता, जिसने भी बांटा निष्काम
आशीर्वाद ले दीन-दुखियों का, जगत का यह सबसे बड़ा सत्काम।

सफलता के पश्चात् नहीं आती खुशियाँ, है सफल, जो है हर्षित,
सत्य कहा कृष्ण ने दे गीता ज्ञान, जो क्रोध-रहित, वह प्रसन्न-चित।

❖

33. प्रेम

प्रेम सर्वदा शाश्वत है, प्रेम है अतुलित अनुराग
प्रेम मय विश्व है प्रेमी मानव रहता वीतराग
परिभाषा प्रेम की अनंत, अनंत इसकी व्यापकता
और अनंत ही होता निष्काम प्रेमी का यह त्याग ॥

प्रेम भक्ति है, प्रेम है साधना, प्रेम लक्ष्य विश्वास
प्रेम हीन मानव नर नहीं पैशाचिक उसका प्रयास
प्रेमानुभूति समझे जो जन, उनसे बढ़कर न कोई
विषय वासना रहित प्रीत ही लाती ईश्वर को पास ॥

प्रीत निभाए प्रीत है अन्यथा जीवन रहता रिक्त
मधुर वचन प्रीत के करते सदा जीवन अभिषिक्त
निस्वार्थ प्रेम मित्र का रहता स्थायी जैसे भूमंडल
प्रेम जीवन शैली प्रेम न कुछ और इसके अतिरिक्त ॥

❖

34. बंद कमरे के अंधेरों में

बंद कमरे के अंधेरों में रौशनी आने दो
बहुत मायूस हूँ जरा मुझे मुस्कराने दो
माना की बाहर बहुत सर्द मौसम है
बहुत गहरी धुंध छाई है
इंसान को इंसान नहीं दे रहा दिखाई है
जज्बाते दोस्ती के हाथ उठाओ
हथेलियों पर प्यार की गर्माहट आने दो
बहुत मायूस हूँ जरा मुझे मुस्कराने दो।

माना की जख्म बहुत गहरे हैं
घायल वतन है, परेशान हर इंसान है
हालात देख देख खुद भगवान् हैरान है
फिर भी इतनी बेसब्री अच्छी नहीं होती
समझदार हो संजीदगी से काम लो
इतना न टूटो की उम्मीदों को ही टूट जाने दो
बंद कमरे के अंधेरों में रौशनी आने दो
बहुत मायूस हूँ जरा मुझे मुस्कराने दो॥

❖

35. बुझते नहीं देखा दीपों को हो समर्पित

बुझते नहीं देखा दीपों को हो समर्पित
झंझावात के झोंकों से क्या हों प्रभावित।

हाँ है चुनौती दीप अंतस तिमिर को
यह मौन दीप दीप्तिमान रहेगा प्रज्वलित।

प्रेयसी के नयन नीर सा है क्यूँ खामोश
आशाओं में बंधा एकांत सा प्रगल्भित।

धरा की अदम्य सहन शीलता लेकर सोच
बतला रही जो हमें कदापि न हो विचलित।

भ्रमर से सम्मोहित सुमन गुंजन करते हैं
करते हैं निस्वार्थ गार उद्यान सुरभित।

रत्नाकर ने दिए गर्भ से रत्न अनमोल
करने को सर्वदा विश्व कल्याण सुनिश्चित।

नैन जब हों सूनें छिपी पीड़ा दर्शाते
करते नहीं कभी ये प्रेम कलश अनुबंधित।

❖

36. फिर दीप न बुझे कभी

फिर दीप न बुझे कभी।

आशाओं की रौ में,
कल्पनाओं की लौ में,
स्वप्न तपा-तपा
जला है दीप अभी-अभी,
फिर दीप न बुझे कभी,
फिर दीप न बुझे कभी।

नव-तरंग, नव-उमंग, नव-उत्साह,
नवल कामनाओं को सजा,
चीर अंध मेघों को,
नवल-पथ पर चला अभी-अभी,
फिर दीप न बुझे कभी,
फिर दीप न बुझे कभी।

गीत अरुणिमा के,
गीत पक्षियों के चहक के,
गीत खिलते पुष्पों के महक के,
गाता रहा हूँ सदा,
यह गीत का सफ़र थमे न कभी,
फिर दीप न बुझे कभी
फिर दीप न बुझे कभी।

❖

37. एक नयी सुबह हो चुकी थी

नयन खुले जब सुबह-सुबह,
देखा हर ओर प्रकाश था,
भोर की लालिमा-युक्त किरणों का,
जल पर प्रतिबिंबित प्रभा का आभाष था।

हरित मखमली कालीन पर,
ओस की बूँदें,
चमक रही थी मोती समान,
गगन पर मुक्त पंक्षी,
कर रहे थे कलरव गान।

मेरे अन्दर का, दूर हो चुका था अंधकार
और, एक नयी सुबह हो चुकी थी।

भुवन भास्कर,
सात घोड़ों के रथ पर सवार,
अबाधित गति से,
उठ प्राची से,
निकल पड़े करने क्षितिज पार।

मैं भी झटक तनाव,
भय-मुक्त, निकल पड़ा, अपने गंतव्य,
निकल पड़ा, दृढ़ कर निज मंतव्य।

मेरे अन्दर का,
दूर हो चुका था अंधकार
और,
एक नयी सुबह हो चुकी थी।

❖

38. संभावनाएं

संभावनाएं
निशा के गहनतम अंधकार को चिर
प्रथम आरुषि के आगमन पर
यथार्थ हो सकती हैं
परन्तु रात्रि के पूर्व
मकरंद की चाह में,
गुंजन करता भ्रमर
बंद हो जाता है शत दल की कोमल पंखुड़ियों में
फिर सोचता है
जब सूरज उगेगा
पंखुड़ियां पुनः खुलेंगी
जब वह स्वतंत्र हो मकरंद पान को गुंजायमान होगा
और उसे
बस सुबह का इंतज़ार है।

गगन अभी शांत है,
राकागण भी यथावत स्थिर हैं
चाँदनी की नज़रों से चुरा
चाँद लाने वाला
एक यह दिल ही गुम है
मुझे इस गुम दिल का ही विचार है
बस सुबह का इंतज़ार है।

अभी समय के झंझावातों में
सूर्योदय छुप गया है
निशावसान हो चुका है पर
लालिमा अनुपस्थित है
सम्बन्ध ऐसे हो चुके हैं
जैसे मूर्तियाँ हो कांच की
गुमसुम, उन्मन, एकांत
दर्द भरी और ह्रदय से शांत
बस सुबह का इंतज़ार है।

समय के आईने में नकली चेहरा सुप्त है
भूत और भविष्य के मध्य वर्तमान लुप्त है,
मानसिकता विचारों से ऊपर उठ चुकी है
रात्रि का अँधेरा
सुबह के कोहरे में विद्यमान है
अंतस की टीस
हथेली पर चलायमान है
बस सुबह का इंतज़ार है।

गलतफहमियां हैं
या
शांत सागर की तलहटी में
उठती तूफानी लहरों का आगाज है
समंदर की खामोशी का इंतज़ार है।

एक दुबकी सी चिड़िया
घोंसले से भटकी
सहमी सिमटी डरी सी
एक अँधेरे कोने में बैठी
कर रही प्रातः की प्रतीक्षा
और उसे भी
बस सुबह का इंतज़ार है॥

❖

39. परिंदों से ऊँची उड़ान के हौसले लिए

परिंदों से ऊँची उड़ान के हौसले लिए
कर रहा था जब उड़ने की कोशिश
गर्द भरे तूफानों ने रोक डाला,
और, अस्तित्व की लड़ाई में
जब अपनी पहचान बनानी चाही
अपनों ने ही टोक डाला।

बहुत मायूस था
दीया लिए एक खड़ा था
बाती भी थी, तेल भी था, बस
एक लौ जलाने वाला ही तो न था,
कसमें खाई थी जिसने
जिंदगी भर मित्रता निभाने की
जरूरत थी जब उसकी बहुत
हिम्मत दिलाने वाला ही तो न था।

सागर के किनारे
लहरों को गिन रहा था
अपने अक्स को
गुम होता सा ढूंढ़ रहा था
दिल किया आचमन कर लूँ।

समंदर सारा उदरस्थ जल में
कहीं न कहीं मिल ही जाऊँगा,
फिर से एक बार
गुम हुए अस्तित्व को
जमीं पर रोशन कर पाऊंगा॥

❖

40. दिवस का अवसान हो रहा है

दिवस का अवसान हो रहा है
छाया भी लंबी होने लगी है,
कृषक भी खेत छोड़ जा रहे हैं,
अब समय आ गया है
रंभाती गायों को अपने निवास में पहुँचाने का,
फिर मैं क्यूँ अड़ा हूँ।

विहग के घोंसलों में जाने का दृश्य
क्षितिज पर अरुणिमा का दृश्य
कितना मनोरम है,
शांत नीरव रात्रि आने को तैयार है,
फिर मैं क्यूँ खड़ा हूँ।

मुझे कितनी तैयारियां करने को है
निंद्रा का आगमन भी होगा,
दिनभर के क्रिया कलापों का चिंतन भी होगा
नयी सुबह
नया सूर्योदय लेकर आएगी
मुझे तो उस सुबह का स्वागत करना है,
बहुत कार्य है
थक गया हूँ
रात्रि की गोद में चिर विश्राम करना है॥

❖

41. अँधेरे कमरे सी जिंदगी

निस्तब्ध अँधेरे से भरा एक कमरा,
और खिड़की पर पड़े परदे पर एक छिद्र,
छिद्र से आती एक प्रकाश रेखा।

ढेरों रज-कण को अपने में रौशन करती,
सामने पड़ी दीवार पर
एक छोटा सा सूरज बनाती,
मानो गगन से उतरकर
सूरज कमरे की दीवार पर टंकित हो गया हो।

परन्तु,
यह दीवार का सूरज एक निश्चित वृत में
ही प्रकाश देता है,
रेखा भी मात्र दर्शाती है उसमे रज-कणों को,
रज-कण तो ज्यूँ जिंदगी की व्यथा हों बिखरे से
एक रेखा में समुच्चय प्राधिकरण
सब तरफ अँधेरा है।

सूरज का दीवार पर टंकण उद्देश्य रहित है,
खोजना होगा एक ऐसा प्रकाश,
आत्म-दीप का,
ज्वलंत रहे प्रकाशित करे
अँधेरे कमरे सी जिंदगी
और जिंदगी के चारों ओर फैले
अनावृत आवृत को॥

❖

42. अभिलाषा

हर क्षण, क्षण-विशेष नहीं होता
होता है यह आम,
कुछ क्षण ही होते जो बनाते इतिहास।

हर बातें मन में नहीं लाती उबलते जज्बात,
कुछ बातें गीता जैसी
दे शिक्षा-महान करती हर दिल वास।

हर व्यक्ति नहीं कर पाता ऊँचे आदर्श स्थापित,
कुछ व्यक्ति ही है गांधी
जहाँ रहा सदा सच्चाई का निवास।

हर मौत शहीद की मौत नहीं
बस है एक मौत गुमनाम सी,
कुछ मौतें होती हैं जो
अमर हो फैलाती प्रकाश।

हर शब्द कृष्ण कन्हैया की
बांसुरी की नहीं होते तान,
कुछ शब्द ऐसे भी झंकृत
मधुर गीत बन करें उमंग का रास।
अभिलाषा मेरी मुझे भी
कुछ ऐसा बन प्रभु,
याद करे विश्व समस्त
मरने पर पाऊँ जन-जन विश्वास।

❖

43. अभिव्यक्ति

कर प्रयत्न की मन-शक्ति उन्नत हो
मार्ग हो प्रशस्त, अंतस चमत्कृत हो,
स्वर्ण पथ सजल प्रज्जवल भी हो।

कान्त-तन हो, शांत-मन हो,
हो तिमिरांत, रात्रि की अवसान हो
जीवन आदर्श उज्जवल भी हो।

अंतःकरण दृष्टिपात हो, चित शांत हो
हो स्फुर्लिंग आत्मसात, आत्मशुद्धि ज्ञात हो
तय स्व-लक्ष्य सफल भी हो।

उन्नत संस्कार हो, त्रस्त-ध्वस्त अहंकार हो,
शिष्ट व्यवहार हो, प्रयत्न शील संसार हो,
स्वाभिमान अंकुरित तप प्रतिपल भी हो।

समृद्ध विचार दर्पण हों, परमार्थ जीवन अर्पण हों,
ईश प्रति समर्पण हो, भावों का तर्पण हो,
आत्म विश्वास सफल-निर्मल भी हो।

❖

44. अभी तो चाँद हैं आसमान पर

अभी तो चाँद हैं आसमां पर
जब जमीं पर उतरेगा तो सोचेंगे।

अभी तो सुख से जी रहा हूँ जीने दो
जब साँसें उखड़ेंगी तब सोचेंगे।
अभी तो बरसात है जोरों पर
पत्तों से पानी टपकेगा तो सोचेंगे।
अभी तो जमीन नरम है सख्त हुई तब सोचेंगे।

अभी तो मौसम सर्द है
जब हवाएं गरम हुई तब सोचेंगे।
कितना दम है मेरे विश्वास में
मुश्किलें आयी तब सोचेंगे।

कितना जोर है इन लहरों में
जब तूफान आया तब सोचेंगे।
लक्ष्य आँखों में होते हुए भी गायब है
जब उस मोड़ से गुजरे तब सोचेंगे।

अंधेरों का क्या सोचना
जब अन्धकार होगा तब दीप की सोचेंगे।

❖

45. आत्म पीड़ा....

पर्वत शिखर पर,
जब स्थिर थी धूप,
समुद्र जल पर,
तब चंचल थी धूप,
जब हथेली में पकड़ने की,
की थी कोशिश,
तब तक लुप्त थी धूप।

न रोक सका, समय को
समझा न सका आहत मन को,
मुस्कराहटों में छुपा न सका दर्द को,
रो कर बता न सका दर्द को,
त्रासदी थी
आत्म पीड़ा को,
चाह कर भी
समझा न सका किसी को।

एक नयी राह पर,
निकल पड़ा,
दूर, बहूत दूर,
न कोई जिज्ञासा
न कोई उमंग,
न कोई कामना
न कोई लालसा
पागल सा,

दर्द छुपाया चलता रहा,
मन की उत्कंठा
आनंद और दर्द का,
उतार-चढ़ाव,
डगमगाते कदमों से,
आत्म विस्मृत सा,
चलता रहा,

चल पड़ा
ढूँढ़ने एक नया मार्ग
चलता रहा
दूर जलती कंदील तक
राह के अंतिम पड़ाव तक।

❖

46. आत्म-मंथन

शून्य आसमान
धुंआ धुंआ होती जिंदगी,
टकराती सी विलुप्त।
शुरू में घनी घनी,
फिर धीरे धीरे फैलती सी,
गुम होती सी,
बादलों के पीछे लुप्त।
धुएं का भी कोई स्रोत होता है,
धुएं का भी कोई कारण होता हैं,
जागृत या सुप्त।
आत्म-मंथन, निष्कर्ष,
आग-ग्लानि-वितृष्णा और
विलीन होता कल्माष धुंआ
प्रारंभ से अब तक की यात्रा,
यात्री बने हम
अवलोकित भूत
संघर्ष और सिर्फ संघर्ष,
सोच
हिमालय सी ऊँची उड़ान,
अवनी से अम्बर तक की उड़ान।
निष्कर्ष
घायल पंक्षी गिर पड़ा पुनः धरा पर
बाकी क्या बचा सिर्फ शून्य...
शून्य और लुप्त होता धुंआ.......॥

❖

47. आवेश में दूरियां बढ़ती हैं

रेत पर चलते हुए लगता है,
कितनी नरम है,
अगर
वेग से फेंकी जाय
तो रेत भी चोट करती है,
जैसे हवा में रेत के छर्रे।

शब्द भी
रेत की तरह कोमल हैं
प्रेम से बोले जाएं तो
जिंदगियां संवरती हैं
नहीं तो
आवेश में दूरियां बढ़ती हैं
वज्र सी हृदय को चीरती हैं।

कोमलता
कठोरता
एक दूसरे के परिवर्तनशील
अध्याय हैं
जिसे जैसे पढ़ना है पढ़े
आशाओं उम्मीदों की डोर में
झूलता जीवन
अनुभव की कड़वी चासनी में

सना जीवन
मुट्ठी में भरी रेत सा
फिसलता जीवन
जीवन चाहे नए आयाम
जीवन चाहे जीना सकाम।

हवा के बर्फीले झोंकों को
छेदों भरी छलनी से रोका नहीं जा सकता
जीवन का यही होता है अंजाम
कंटक भरे मार्ग को
यूँ ही नहीं किया जा सकता पार
एक हौसला, आत्मबल, साहस
एक जज्बा होना चाहिए
राह के शूल भी
बन जायेंगे फूल
परिस्थितियाँ होंगी
अनुकूल॥

❖

48. उत्कृष्ट प्रेरणा का माप दंड है जीवन

उत्कृष्ट प्रेरणा का माप दंड है जीवन
निष्क्रिय विचारों की प्रताड़ना है जीवन
कुहासे की घुटन है जीवन
नागफनी के शूलों की चुभन है जीवन
कागज की नाव है मेरी
और उफनती नदिया है जीवन।

गहन धुंध मस्तिस्क में छाई जा रही है
मानो सुबह सबेरे सूरजमुखी मुरझाई जा रही है
समय की ठण्ड से सिकुड़ कर
विचार सारे एक कोने में जम गए हैं
लौह के प्रकोष्ठ में बंधे विचारों से
आत्मीयता बंधी हुई जा रही है
इस प्रकोष्ठ की कुंजी है जीवन।

कोई इस कुंजी को ला दे
कोई मुझे स्वतंत्र करा दे
मैं खूब ऊपर खूब ऊपर
कुहासों एवं धुंध से भी ऊपर उड़ना चाहता हूँ,
जहाँ एक स्निग्ध शीतल नील व्योम होगा
और होगा एक शांत आत्मीय जीवन।
मनभावन धूप से जम गए
भावनाओं के विचारों को पिघला कर
पाऊंगा एक नव जीवन॥

❖

49. उत्साह

जब विफलताएं समक्ष होती हैं,
हृदय आहत भी होता है
पर निश्चय है,
निश्चय अपना कभी न टालूंगा
विफलताओं से हार न मानूंगा।

रोग ने भी ग्रस्त किया
शोक ने भी त्रस्त किया
धैर्य कभी न छोड़ूँगा
उत्साह कभी न तोड़ूँगा
विफलताएं ही खोलती द्वार
सफलताओं का
निश्चय अपना कभी न टालूंगा
विफलताओं से हार न मानूंगा।

नेपोलियन सा दृढ़ निश्चयी बन
पर्वत श्रृंखला तोड़ गिराऊंगा
रंजित सिंहजी सा संकल्प ले
सिन्धु सरिता को पार कर जाऊँगा
उत्साह नवीन निज मन में लाऊंगा
निश्चय अपना कभी न टालूंगा
विफलताओं से हार न मानूंगा।

उत्साह लाता जीवन चरमोत्कर्ष
उत्साह बनाता स्व-लक्ष्य आदर्श
उत्साह बढ़ाता मनोबल को
उत्साह कराता दुष्कर कार्य सहज
अवसाद ग्रस्त होता वही
जिसमें उत्साह नहीं,
प्रसन्न चित होना है मुझको
मुझे असफलताओं की परवाह नहीं
निश्चय अपना कभी न टालूंगा
विफलताओं से हार न मानूंगा।

असंभव होता कुछ भी नहीं
अगर इच्छा शक्ति हो उत्कर्ष पर
हर मार्ग करना है सरल
जितना है हर जीवन युद्ध संघर्ष कर
परिस्थितियों को बना मनोनुकूल
डरता नहीं आपदाओं की मार से
डरता नहीं कभी मैं हार से
निश्चय अपना कभी न टालूंगा
विफलताओं से हार न मानूंगा॥

❖

50. एक छोटा सा रौशन दीया

अँधेरे कमरे में भर देता है उजास
और सूर्य की तीव्र किरणें
खिड़कियों की झिर्रियों से आती हैं
एक रेखा सी बस खींच जाती है
नहीं होता कमरे में प्रकाश
एक समर्पण है पूर्णता का
एक संकुचन की परिणिति
दोनों ही अवस्था में
अस्तित्व की होती अनुभूति।

विचारों का खुलापन छोटे से दीए की भांति है
संकीर्णता कभी भी पूर्ण नहीं हो सकती है
टप टप करती छत
या टपकते बेबसी के आंसू
संघर्षशीलता की कमजोर कड़ी होते हैं
जो एक सीमित दायरे में ही होते हैं
नज़रंदाज़ कर इनको
अनवरत बढ़े चलो बढ़े चलो॥

❖

51. एक दिन

एक दिन
मैंने पूछा जिंदगी से
क्यूँ है इतनी उदास
बिखरे बिखरे सपने
अनबुझी सी प्यास,
जिंदगी कि राह
क्यूँ है इतनी कठिन
बिछे हुए है शूल ही शूल
बीतते हैं दिन
गिन गिन,
अनवरत अपनों का घात
हृदय संकुचित भय अज्ञात,
आततायियों का आतंक
जीवन आक्रांत मानवीय मूल्य
क्षीण नितांत, अमर बेल सी
बढ़ती महंगाई त्रस्त जन जीवन
अभ्यस्त मंत्री गण,
जिंदगी ने
एक शब्द में ही दिया उत्तर
हमें किया अनुत्तर
जिंदगी दो दिनों का खेल
जियो भरपूर
प्रतिपल, प्रति क्षण
जिजीविषामः ॥

❖

52. ऐसा क्यों है?

बरसती-गरजती रात
हवा-तूफान और बादल
चारों दिशाएं अंधकार में
और विद्युत-नृत्य,
मन में उठता हुआ विचार
उम्र की दहलीज़ पर कांपते पेड़ों की पात सी
विगत स्मृतियाँ
स्मृतियों में विगत कृत्य।

रात्रि का होता अवसान
लुप्त होती दीप-शिखा
एक दूसरे के पूरक
एक दूसरे के सखा
युवावस्था में प्रकाश साथ होता है,
बुढ़ापे में बुढ़ापा खुद बोझ ढोता है।

मध्य रात्रि
निंद्रा से जागृतावस्था
स्वप्न के टूटते दृश्य
बाहर आते ही अम्बर पर
सितारों की झिलमिलाहट,
शांत निःशब्द
मात्र एक अजनबी सी
गुनगुनाहट॥

❖

53. काल के अंतराल में बदलाव नहीं होते

जीवन में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं,
जब मन चाहता है कि समय ठहर जाए
जब हम कोई भी निर्णय लेने लायक न रह पायें
भविष्य के उस दामन से बच जाएँ
जो कितने अनसुलझे सवाल लाने वाला है,
जो अतीत को आत्म-मंथन के सागर में पाने वाला है।

समुद्र के किनारे आती जाती लहरें,
लहरों से दूर जाती,
पास आती कागज की कश्ती,
मन के मंथन की तरह
कभी अतीत में तो कभी आज में
कभी भविष्य को ढूँढ़ती जीवन-शक्ति,
अनबुझे प्रश्नों से अनवगत
उत्तर को खोजती प्रयत्न में सतत,
जिंदगी चलेगी अनवरत।

समय तो निरंतर गतिशील है
यह है मेरा जीवन असमंजस क्यूँ
काल के अंतराल में बदलाव नहीं होते
भविष्य निर्मित करने को
उत्तरों में ठहराव नहीं होते
उत्तर तो हमें ही देना है
ठहरे वक्त को नए आयाम की
परिधियों में लेना है।

❖

54. पतझड़ का मौसम

मेरा जीवन
पतझड़ का मौसम
सूखे पत्ते सा उड़ बिखर बिखर चला
न जाने कुछ इधर चला कुछ उधर चला
मेरा जीवन.......

आशाएं क्षत हुई,
प्रेम लय गुंजित था जो अवनी तल पर
अंतस को कर धुंआ धुंआ छा गया नभ पटल पर
संपीड़ित आशाओं को पुनः डस ठहर चला
मेरा जीवन.........

आरुषि के प्रथम प्रहर में
अभी भी बाकी है रात्रि के अंधकार की छाप
हृदयाघात पर औषधि लेपन बन चला अभिशाप
भूत भविष्य वर्तमान की मानसिकता से उठ ऊपर चला
मेरा जीवन...........

ये जीवन तो
एक किनारा है सुख दुःख की लहरें आती जाती
कुछ में है कलकल निनाद कुछ झंझा बन टकराती
वेदना का अब मोल कहाँ, सुख सपन बन भ्रमर चला
मेरा जीवन.............

❖

55. मौसम का असर

मौसम का असर है,
या उम्र का।
क्यूँ इतना मायूस हुआ जा रहा हूँ,
सूखे ठूंठ सी लग रही है जिंदगी,
अकेला हूँ,
बिल्कुल अकेला
पतझड़ के दरख़्त सा खाली खाली हो रहा हूँ,
मौसम खुशगवार हो और हरियाली आये,
नागफनी के जंगल में भटकता मैं,
ढूंढ़ रहा हूँ एक खामोश शांत सी पगडण्डी,
घर जाने की राह,
कोई राह
तक रहा मेरी,
हजारों दुआएं की थी मैंने,
असीम सुख प्राप्त करने की,
धीरे धीरे समय समीप आ रहा है,
पिया मिलन को मन व्याकुल हो रहा है,
मालूम है
वहीं मिलेगी चिर शान्ति,
कभी न ठूंठ हो सकने वाली फिजां,
पलाश के फूलों सी मोहक घटा,
और चिर विश्राम।

❖

56. चक्षु-जल बह जाने दो

चक्षु-जल बह जाने दो।

चक्षु-जल बह जाने दो,
कर दो रिक्त नयनों को,
अभी तो आएंगे तूफ़ान ऐसे ऐसे,
नैनों को खाली ही रह जाने दो,
चक्षु-जल बह जाने दो।

हौसला रखना होगा भारी,
लड़ना होगा मित्र बने गद्दारों से,
कौन जीतेगा, कौन हारेगा,
आहत ह्रदय ही होगा,
आहत मन को
व्यथा बस सह जाने दो,
चक्षु जल बह जाने दो।

भाग्य ही जब रूठ जाएगा,
प्रत्येक कार्य उल्टा पड़ जायेगा,
मन करने लगे हार की बातें,
भूल अवसाद की बातें
नया उत्साह लाने दो,
चक्षु जल बह जाने दो।

जग सारा दुखी हो रहा
विपदा ऐसी घनघोर छा रही
ऐसे में मन त्रस्त हो घबराएगा
अवसाद से स्वयं को घिरा पायेगा
घबराना नहीं तब रख धैर्य
समय रीत जाने दो
चक्षु जल बह जाने दो।

जीवन तो है धूप छांव का खेल
कभी खुशियों की लहर
कभी दर्द भरा जहर
सूरज जब सर पर चढ़ा हो
आतप से मन उखड़ा हो
तब शीतल बयार को आने दो
चक्षु जल बह जाने दो।

रिक्त नयनों में
अश्रु हर्ष के भी आने दो,
चक्षु जल बह जाने दो॥

❖

57. दीप सतत तू जल दीप प्रबल तू जल

ऐ ज्योति पुंज ऐ अमिय कुंज निर्मल
ऐ अंतर्मन के दीप प्रखर तू जल
दीप सतत तू जल दीप प्रबल तू जल॥

प्रेरक भावनाओं से हो प्रकल्पित
गहन तम के कण-कण में हो प्रज्वलित
काट काट अन्धकार के बंध प्रबल
ज्योति वर्तिका अहिर्निश सतत तू जल
दीप सतत तू जल दीप प्रबल तू जल॥

भावना भरा यह वृहत्तम सन्देश
ले जीवन का नवीनत्तम आदेश
मधुर मधुर गीतों का ले तू संबल
कल्मष उर के काट निरंतर चंचल
दीप सतत तू जल दीप प्रबल तू जल॥

मचल रही क्यों अंतस की आशाएं
तमस मध्य ज्ञान ज्योत कौन जलाये
स्वप्न कनक देख भरमाये मन चपल
दुर्गम पथ प्रज्वलित कर विशेष अटल
दीप सतत तू जल दीप प्रबल तू जल॥

मुदित-मदिर मधुर जल दीप मचल मचल
नभ के नव दीप जल ले प्रकाश नवल
दीप सतत तू जल दीप प्रबल तू जल॥

❖

58. चाहता हूँ

चाहता हूँ
मुक्त छोड़ दें मुझे
विस्तृत सागर में
मुझे अपने बाजुओं पर भरोसा है
पतवार कमजोर हो तो क्या
पार तो लग ही जाऊंगा
हवाओं के रुख से दोस्ती है मुझे
भंवरों को पहचानता हूँ
नहीं डरता तूफान की धमकी से
तूफानों का मुख मोड़ना
भली भांति जानता हूँ
छिछले किनारों पर तो
कश्ती डोलती है
गहरे पानी से
निकल आना
मेरी आदत है
डरता नहीं
लहरों को चीर बढ़ना तो
मेरी आदत है॥

❖

59. चींटियाँ

चींटियाँ
दर चींटियाँ
एक के पीछे एक
अनगिन अनेक
सभी कार्यरत
सभी अग्रसर
लक्ष्य विशेष पर
न ठहरती
न रुकती
लगातार
तल्लीन
रात दिन
मनुष्य जीवन को देती शिक्षा
रहें प्रयास रत
न विघ्न से झुकें
न राह शूल से रुकें
चलें आप भी अनवरत
अथक लक्ष्य तक॥

❖

60. जाड़े की धूप

जाड़े की धूप
प्यारी सी,
मन को करती अभिभूत,
यों लगे किसी दीन की झोली में
दौलत अकूत,
क्षणिक सुखद,
साँझ परे चली जाने वाली,
सदा न रहने वाली।

फिर
ठिठुरती रातें,
सिकुड़ती जिंदगी,
लम्बी,
न खतम होने वाली सी,
इंतज़ार करती सुबह का,
खिली खिली धूप का।

फिर अस्थायी,
स्थायी तो बस
जीवन साधना
प्रातः के सूरज सी,
शान्ति-प्रद।
और
अखंड चिर निद्रा।

❖

61. जियो छोटी छोटी मुस्कराहटों में

पल-पल बीत रही घड़ियाँ जीवन की,
साल गुजर रहे गिन गिन,
कहते इसी को क्या जीना,
सोच सोच मन उद्विग्न!

होती नहीं कोई प्रतिक्रिया पाषाणों पर
चाहे बारिश हो या हो धूप,
मानव शरीर मिला फिर भी
क्यूँ हो रहा मृत स्वरूप!

नहीं अकेला तू जिसका मन हो रहा विचलित,
नहीं अकेला तू विश्वास-घात से ग्रसित,
नहीं अकेला तू प्रेम व्यथा से व्यथित,
नहीं अकेला तू जिसके स्वप्न हुए बिखरित,
नहीं अकेला तू हुआ जो धन रहित!

न समझ तू अपने को भाग्य-हीन,
अवसाद से त्रस्त खोल अपने नयन,
देख अपने चहुँ ओर,
दुखित, त्रसित, विचलित, सभी का मन!

जीवन है बहुमूल्य निधि
जीवन के हर पल को जियो,
लोचन मध्य कर आसिन स्वप्न आशाओं के,

सपने दिवाकर की अरुणिमा-मय रश्मियों के,
क्षितिज पर करने की अभिलाषाओं के,
जियो तो प्रफुल्लित हो जियो।

सीखो जीना
अम्बुधि की मचलती तरंगों से,
पर्वत सी ऊँची उमंगों से,
चलती ठंडी बयार से,
पतंगों के प्यार से,
कलरव करते पाखी के गान से,
प्रकृति के समस्त अभिमान से!

दुःख-सुख तो अटल है,
रात-दिन की मानिंद,
आता पूर्णिमा के बाद
अमावस का घना अँधेरा,
तूफानी रातों में
घनघोर घटाओं को चीर आता सबेरा!

तू मनुज धैर्यवान,
कर चिंतन
हो मननशील,
मत घबरा इन बातों से,
हो नहीं मृत-तुल्य
जियो छोटी छोटी मुस्कराहटों में,
छोटी छोटी जीवन आहटों में!

❖

62. दूर कर दुर्बल कामनाएं अवांछित

अनेक आशाओं में जी रहा,
दयनीय वेदनाओं से ग्रहित,
हर वेदना निज मन की
रक्षा स्वयं करनी यह सर्वविदित।

बिन मांगे सब मिल जायेगा,
कर अपनी बढ़ती इच्छाओं को संकुचित,
देख सूरज, चाँद, सितारों को,
सब कर रहे
जग को दे प्रकाश आलोकित।

अंतराल के घेर में
हो रहा निस्तेज
तू क्यूँ घूम रहा अनिश्चित,
इस जीवन को पाने को,
कर अपना लक्ष्य निर्धारित,
संकट से मत घबरा,
दूर कर
दुर्बल कामनाएं अवांछित,
बन उस योग्य की,
तुझे स्वीकारे सभी निर्वाधित।

❖

63. जीवन-पथ

जीवन प्रशस्ति पथ पर,
रह तू अग्रसर, अग्रसर।

पृथ्वी, नभ, तारामंडल, आकाश गंगा
सभी चले मार्ग विशेष पर।
काल के अनुकूल,
रह तू अग्रसर, अग्रसर।

अमावस्या तो निश्चित है,
पर पूर्णिमा कर रही इंतजार।
कठिन अति है मार्ग,
पहुँचना तुझे क्षितिज पार।
अविरल चला-चल
रह तू अग्रसर, अग्रसर।

अपने पद-चिह्न इतने गहरे बना,
आने वाले को चले पता,
कर चुका जीवन अर्पण,
एक विजयी दल,
इस मार्ग पर गुजर कर।
जीवन प्रशस्ति पथ पर,
रह तू अग्रसर, अग्रसर।

❖

64. जीवन की सच्चाई

छुप-छुप बहते आंसुओं को
निज हाथों से पोंछना सीख गया,
झूठी मुस्कराहटों से
हृदय-वेदना ढँकना सीख गया।

नयन-रस अब
नहीं बह रहे व्यर्थ,
आकुल नहीं उन्मन मन,
इच्छाओं का रहा न कोई अर्थ।

जीवन तो जीवन है
नहीं-मात्र यह बहता पानी,
कर हृदय दृष्टिपात
सत्यता जीवन की है जानी।

ऊँचे-ऊँचे आदर्श किये
जीवन मध्य आत्मसात,
प्रसन्न जीवन मेरा कर
नैसर्गिक परम्पराओं को प्राप्त।

जान गया क्यों
अवनि इतनी तपित,
अम्बर भी न दे सके सुख,
जीवन से ही जीवन प्रफुल्लित।

राह कितनी भी थी कठिन
चलता रहा मैं रुका नहीं,
संघर्ष हर पल आते रहे
लड़ता रहा झुका नहीं।

अब और जान गया
जीवन का क्या परम सत्य,
जो झुक गया
उसका जीवन बचा नहीं।

जीवन ही है नयी आशाएं,
जीवन ही है नव-उल्लास,
जीवन ही है नयी अभिलाषाएं
जीवन ही है नव-विश्वास।

❖

65. जीवन में कुछ अनुशासन रहना ही चाहिए

जब पतंग उड़ाई जाती है
तब ढील दी जाती है,
कभी खिंची भी जाती है,
यह सब होता है संतुलन बनाने के लिए,
जिंदगी भी
इसी ढील और तान के बीच
झूलती हुई कहानी है
जीवन का संतुलन भी
सुख-दुःख से ही है बना हुआ,
न हो यह संतुलन तो जीवन
हो जाता है कटी पतंग,
धीरे धीरे डोलते डोलते
भूमि के अस्तित्व को पहचान लेता है,
ऊँची उड़ान भरनी हो तो
संतुलन बनाना ही चाहिए
जीवन में कुछ अनुशासन
रहना ही चाहिए।

❖

66. तमस-रजनी-अन्धकार

तमस-रजनी-अन्धकार,
हर ले अंतस से
दूर कर अनाचार,
प्रभा-विभा-आभा
प्रज्जवलित कर
असत्य-विहीन यथार्थ
समावेशित कर
साभार।

समर्थ कर
पी जाऊँ विष
बन नील कंठ
अम्बुधि मंथन हो
हो अमृत पान
पुण्य धरा पर
नाशित हों अधर्म-भ्रष्टाचार।

पुनः अवतरित कर राम-कृष्ण
गुंजित हो शान्ति गान
अनवरत चलूँ दहकती अनल हो
हो कंटक मार्ग
परिवर्तित कर
पुष्पित कर पथ
संवर्धित प्रसार।

❖

67. देख रहा दूर दीप-रश्मियाँ

चार वर्षों का अंतराल,
और ये अंतिम सूर्यागमन,
ये चीरती भोर की,
लालिमा युक्त रवि-रश्मियाँ,
और ये सघन श्याम मेघाच्छादित गगन।

हर रश्मि दे रही
एक सन्देश,
एक दिशा निर्देश,
एक भाव विशेष,
एक चाह अनिमेष।

झांक विगत समयांतराल में,
देख रहा,
कुछ मधुर,
कुछ कटु अनुभव,
सोच रहा
क्या खोया
क्या पाया
राह में जो आया
भावुक हृदय में समाया।

माँगा
कुलदेवी से,
रूपं देहि,

जयं देहि,
यशो देहि,
माँ ने दिया सब
मैंने पाया सब।

अपनों का प्यार
मिला न मिला
पर आघात अवश्य मिला,
अंगुली थामने को
एक मिला
जहाँ प्यार मिला
मान मिला,
मानसिक उत्थान मिला,
सामाजिक स्थान मिला।

लौट आया आत्म-बल,
रोग को पछाड़ कर,
लौट आया जीवन संबल,
खुशियाँ मिली फूल खिले,
तो कुछ अद्भुत अनुभव भी मिले।

नादान जान गले लगाया जिसे,
अपनों से ज्यादा किया विश्वास,
पलकों पर बिछाया जिसे,
लुट चुका था जो
फिर से बसाया जिसे,
न जाने क्यूँ,

ऐसी घात कर गया,
विश्वास को छार-छार कर गया,
जिसे हमने नव-जीवन दिया,
वही जीवन पर वार कर गया,
मानसिक रूप से ही नहीं,
आर्थिक रूप से भी बर्बाद कर गया।

अब गगन भी धरा चूमने लगा है,
नयी राह पर
तलाश नयी मंजिलें,
ये कारवां निकलने लगा है,
छोड़ उन अंधियारे क्षणों को,
देख रहा दूर दीप-रश्मियाँ
भविष्य की सुनहरी अभिव्यक्तियाँ,
निकल पड़ा पा
नयी दिशा, नयी राह।

❖

68. कुछ कर के दिखाओ

धुएं की लकीर दिख रही है
ऊँचे गगन में,
अवश्य अनल कहीं सुलग रही है,
सबों के मन में,
धीमी धीमी आंच
धैर्य-सीमा ढूंढ़ रही है।
वर्षों से सुलगती सुप्त अनल,
जन-मानस को करती विकल
कहीं कोई ज्वालामुखी तो नहीं,
कहीं कोई दुखी तो नहीं।

अगर ज्वालामुखी फूटा
लावा बहेगा
भष्म-सात होंगे
कईयों के नामोनिशान,
हृदयंगम विवशता
बाहर आकर पुनः स्थापित करेगी स्वाभिमान।

बस समय आ चला है
उठो
मात्र चिंघाड़ने से कुछ नहीं होने वाला
कुछ कर के दिखाओ,
परिवर्तन अटल है
परिवर्तन लाओ।

❖

69. न भूले व्यथा की जलन को

जब दीए की बाती जलती है
छोटी होती है,
और जब
हृदय जलता है
वेदनाएं बड़ी होती हैं,
कबीरा का जला कर
कोयला का राख बनाना
सार्थक होता है,
जब निष्कर्ष चिंतित होता है,
जब मनन विचलित होता है,
जब मार्ग भ्रमित होता है,
अत्यंत वेदनामयी होता है,
जब प्रयत्न
जल प्रवाह से विपरीत होता है,
मनुष्य वही
जो प्रवाह की दिशाएँ मोड़ दे,
न भूले व्यथा की जलन को
उसे शक्ति में जोड़ दे,
आरूढ़त्ज्य न बने
शीर्षारुढ़ बने,
जला न सके अनल कोई,
ऐसी मनोशक्ति की सत्ता का आरूढ़ बने।

❖

70. परिवर्तन

जगत तो है गतिशील
प्रतिदिन परिवर्तनशील
बाल्यकाल से निर्वाण तक
हर क्षण हर पल
बदलते उद्देश्य
बदलते रहते ध्येय।

सफलताओं एवं असफलताओं
में तत्पर
परन्तु अंततः प्रगति की ओर अग्रसर
बदलना ही नियति है,
परिवर्तन को करो स्वीकार हंसकर
अन्यथा अवसाद से ग्रसित मन होगा
मलिन आनन् होगा।

सूर्य वही रहता
चन्द्र भी वही
परन्तु बदल बदल हर दिन देते
एक नयी ताज़गी
एक नया आयाम
शीतलता, उष्णता का
नित नया परिणाम।

निशा उदीप्त होती राकागण की प्रभा से
बदलती स्थिति तारों की
कभी आभा कम नहीं करती
बदलती स्थिति सितारों की
कभी कर्मशीलता कम नहीं करती।

जल की बूंदें
गिरते हुए दिखती हैं
ओस की बूंदें
गिरते हुए नहीं दिखती
बल्कि
उषा की प्रथम किरणों के साथ
अहसास होती हैं,
आँखों को शीतलता देती हैं,
क्यूंकि ओस की बूंदों में
परिवर्तन निहित है,
प्रकृति से परावर्तित
एक क्रिया बिम्बित है।

परिवर्तन जैसे जीवन
गतिशील बनाता है,
परिवर्तन ही जीवन
अनुभवशील बनाता है
परिवर्तन से क्या घबड़ाना
परिवर्तन को तो है
दिल से लगाना॥

❖

71. परिस्थितियां

क्या दान,
क्या धर्मात्मा,
सब है धर्म-चेतना का अहसास।

क्यों भिक्षु बने खड़े हम,
क्यों नही स्वयं पर आश्रित,
क्यों हैं पराश्रित,
क्यों आकाश को देख रहे,
क्यों धरा की यथास्थिति नहीं पहचानते,
क्यों पावस ऋतु के मयूर नर्तन से खुश हो रहे,
क्यों तपती रेत पर विचलित हो रहे,
क्यों मन-संतुष्टि नहीं होती।

स्वयं पर विश्वास न करने से उत्पन्न है यह स्थिति,
आत्म-विश्वास, आत्म-संतोष और आत्म बल
रखना होगा कैसी भी हो परिस्थिति,
यही सब कटु कष्टों का निदान है,
यही सच्चा ज्ञान है।

कंटक मंडित यस्तिकाओं पर करता रहा
जीवन व्यतीत,
मालावत के हाथों होता था श्रृंगारित,
मालावत के हाथों होत,
तोड़ तोड़ किया किसने मुझे इतना अव्यवस्थित।
पुष्प माला बनायी गयी

तीक्ष्ण सुई की नोंक से
मुझमें धागा भी पिरोया गया
आहत हुआ फिर भी सुवास बिखेरता ही रहा,
घायल सीने से बोल प्रीत के बोलता ही रहा
मालाबद्ध हुआ
फिर भी अर्पित होता ही रहा।

कभी चढ़ बैठा शीश पर,
कभी प्रेयसी का हुआ गलहार,
कभी अलविदा होते शव का शृंगार
देवों की प्रतिमा पर सज बना जीवनाधार,
यही मेरा संस्कार। यही मेरा संस्कार।

मकरंद भरा मेरा यौवन
भ्रमर को देता आमंत्रण,
मिट जाऊँ यही सीखा मैंने,
प्रेम में बह जाऊँ यही जाना मैंने।

ये जीवन सुमन दे रहे सन्देश
मुश्किलें हो कितनी भी,
छोड़ न देना निज स्वभाव,
परिस्थितियों में रहना पड़े कहीं भी
खुश रहना बढ़ाते रहो यश,
बढ़ाते रहो प्रभाव।

❖

72. प्रखर ज्योति-पथ प्रत्यक्ष

जीवन समर हार से न हार, चला चल तू अथक
प्रयत्न होंगे सफल सम्पूर्ण, देख विजय समक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ प्रत्यक्ष।

काट कलुषता जीवन भर की, मन आलोकित कर
डगमग डगमग न हो तू कभी, पा जायेगा लक्ष्य।
प्रखर ज्योति-पथ प्रत्यक्ष।

दृग मुक्ता-जल बरस रहा व्यर्थ, धीर-रणवीर बन
कंटक रहित हो मार्ग तेरा, बढ़ा जा निष्पक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ प्रत्यक्ष।

निर्जन सा क्यूँ उदासीन कर, श्रृंगारित उपवन
कर लताओं संग आच्छादित, पुष्प अंतस कक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ प्रत्यक्ष।

जय-पराजय तो अनिश्चित हैं, निश्चित अब न जान
कालिमा लिए रात्रि के बाद, आता सूर्य भान
पलट देगा हारी बाज़ी
तू मनुज है दक्ष।
प्रखर ज्योति-पथ प्रत्यक्ष।

❖

73. आ अब बढ़ चलें

आ अब बढ़ चलें,
नभ को चूम लें,
धरा को भी हम
नाप पग-पग घूम लें।
लायें आशाएं क्षितिज के मिलन की,
स्वर्णिम दीप शिखाएं जलाएं हम,
स्वप्निल भविष्य आगमन की।
बढ़ चलो गगन को चूम लें।
आ अब बढ़ चलें,
नभ को चूम लें,
धरा को भी हम
नाप पग-पग घूम लें।

कर्तव्य बोध हो
जीवन न प्रतिशोध हो,
अपनी कलाएं अपनी हों
अपनों के लिए जिएँ
अपनों के लिए मर जाएँ
आ अब बढ़ चलें,
नभ को चूम लें,
धरा को भी हम
नाप पग-पग घूम लें।

पंक्षी बन मुक्त अम्बर में उड़ें सभी,
लहराती मौजों से मचल-मचल
हृदयानुभूति को अनुभूत करें कभी
मेघ-अश्व पर हो सवार
कामनाओं की मंजिलें ढूंढ़ने चलें,
रिमझिम रिमझिम बारिश के छींटों से,
मनोद्गार सींचने चलें
आ अब बढ़ चलें,
नभ को चूम लें,
धरा को भी हम
नाप पग-पग घूम लें।

❖

74. बूँद बूँद सागर...

प्रतीक्षा कर रहा हूँ सदियों से
फिर भी नहीं आता वो पल
प्रतीक्षा का दर्द मुझे पता है
मैंने सम्पूर्ण आस्था से किया है इंतज़ार।

अतृप्त सागर का इंतज़ार
मोती बना जाए
ऐसी एक बूँद का इंतज़ार
बूँद बूँद सागर...........।

जीवन में नए वर्ष की प्रतीक्षा
हर वर्ष पूर्ण होती है
वर्षांत में निष्कर्ष
प्रतीक्षा के पल और भी दूर होते हैं
फिर रह जाता है इंतज़ार
एक और नए वर्ष का,
गति से बदलती जिंदगी का
मानो हो कलेंडर नए वर्ष का।

हर समय यही सोच
शायद अब हो प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त
शांत, प्रगतिशील भविष्य हो प्राप्त

पर दिनों दिन भ्रष्टाचार-अनाचार बढ़ रहा
मेरे कल्पना का देश
मुझसे और दूर निकल रहा।

माना की जगत में खुशियों की कोई बात नहीं
फिर भी एक दीप आशा का जलाता हूँ
निश्चय ही आयेगा सबेरा निर्मल
प्रयत्न अगर दृढ़ हो तो
बूँद बूँद सागर.........।

❖

75. बूँद

अपने आवास में बैठा
बरामदे से झांक
देख रहा तरण-ताल के जल पर
बरसात की रिम-झिम गिरती बूँदें गिर कर
अजीब अनुभूति करा रही थी
मानो अंतर्मन को सरल कर रही हों
शांत ह्रदय को चंचल कर रही हों।

शून्य में देख रहा
काले बादलों का जोर
टप-टप गिरते जल का शोर
सघन मन तरल से
विरल हुआ जा रहा था, सोच रहा था
हम भी वर्षा-जल से हैं,
विशाल जल-समूह में मिलकर मात्र
एक बूँद बन कर रह जाते हैं।

अपना अस्तित्व भूल कर
जन समुदाय में खो जाते हैं
बरसात की बूंद की तरह
हमें अवश्य बरसना चाहिए।

पर सागर में न खो कर
स्वाति बन मोती बनना चाहिए॥

❖

76. भूत-भविष्य-वर्तमान

भूत-भविष्य-वर्तमान
समय की सीमाओं की परिस्थितियां,
परिस्थितियां जो हमें बनाती काल का दास,
झूझते रहते बीत चुके कल में हम,
सोचते रहते आने वाले कल को हम,
आज से अनभिज्ञ,
दिग्भ्रमित।

जो जा चुका उस कल को
क्या हम संवार सकेंगे,
जो आने वाला है
क्या हम उसका कुछ कर सकेंगे,
दोनों का कोई अस्तित्व नहीं,
वर्तमान ही निश्चित।

क्याों चिंतित हैं भविष्य को सोच कर,
अपने को निश्चित करने में भविष्य है सक्षम,
केन्द्रित करो दृष्टि वर्तमान में,
प्रसन्न रह कर गुजारो जीवन उत्तम,
भूत-भविष्य स्वतः प्रसन्न होंगे,
अगर होंगी वर्तमान की आशाएं अनुपम।
तब न होगा चिंतित।

मनुष्य वो नहीं जिसे बांधती समय की सीमायें,
मनुष्य वो नहीं जो नहीं रखता ऊँची आशाएं,
मनुष्य तो वह है जो गगन को और ऊँचा उठा दे,
मनुष्य वो है जो अपनी उड़ान और ऊँची उठा दे।
सीमायें होती अपरिमित।

❖

77. भूल जा भूल अपनी

भूल जा अपने उद्वेग को,
भूल जा अपने आवेश को,
भूल अब औरों की गलतियों की चाह।
भूल अपनी भूल को
बन शक्तिशाली, सुदृढ़,
मार्ग दर्शक तू, तय कर खुद अपनी राह।
न होने दो असर
अपमान का निज मन पर
ला न मस्तिष्क में कोई अवसाद तू।
भूल कर सब-कुछ
संभाल अपने आप को
चख अब प्रसन्नता का स्वाद तू।
भूल जा स्वप्न अतिरेक के,
भूल जा उचित-अनुचित
भूल न जाना मार्ग पर चलते अपने आदर्श को।
भूल कर भी न समझ
कमजोर, शक्तिहीन, तुच्छ अपने आप को,
इच्छा-शक्ति कर प्रबल, ले बड़ों के परामर्श को।
भूल न जाना अतीत की यादों को,
भूल ना जाना मन की बातों को,
मन की बातें ही निर्देशित करती आनेवाला हर पल।
भूल न जाना दोस्तों की दोस्ती,
भूल ना जाना पश्चातापों को,
पश्चाताप की आग में झुलस हृदय होता निर्मल।

❖

78. भूल

भूलें तो की होंगी आपने भी,
कई सारी ऐ जनाब,
कभी उनका हर्जाना भी
भुगता होगा बेहिसाब।

हर भूल के बाद सोचा होगा,
न करूँ अब अगली बार,
फिर भूल कर भूल,
की होगी गलती बार-बार।

क्योंकि दिल तो मचलता है,
फिसल ही जाता है गलतियाँ करने को,
देख कर दुनिया की चकाचौंध,
ठहरता नहीं एक ठिकाने,
कभी इधर तो कभी उधर बहकता है,
बिजली की चमके जैसे कौंध।

कभी धूप में,
तो कभी छाँव में भी,
ढूंढ़ता रहता सहारा
सहारा जिसे पाकर भूल से भी ना करूँ भूल
परन्तु ऐ मेरे दोस्त
वो सहारा बेहद मुश्किल आजकल,

खाकर चोटें भी दिया करते थे
दोस्त सहारे समय के अनुकूल।

है वहाँ तू है जहाँ,
जो है बस अपने खुद के विश्वास से है
भूल से भी तूने खोया विश्वास अगर,
न होगी कोई हस्ती आपकी
न होगी सच्चाई आपकी
होगी बस तूफां में डूबती डगर॥

❖

79. मेरी डगरिया

मेरी डगरिया
ऊँची-नीची लहराती सी
पहाड़ी लोक गीत की तरह
स्वतः उद्भाषित
कभी विरह गीत तो
कभी आल्हाद के गीत,
गंतव्य पर पिया मिलन की आस
बुझाने तृषित नैनों की प्यास।

जीवन भी तो एक डगरिया है,
सुख-दुःख के उंचाई-गहराई
पर चढ़ता उतरता
आस-पास की
कल्मषता को करता आत्मसात
लाता हर रात्रि के बाद प्रभात।

डगरिया की हर डगर
उन्मुक्त ह्रदय को सींचती
किसी के और करीब होने का
देती अहसास
साकार का निराकार में मिलन
अंतिम डगर
अंतिम स्वास
अंतिम प्रयास॥

❖

80. भोर के उजाले का इंतज़ार है

अभी समय के झंझावातों में
सूर्योदय छिप गया है,
रात्रि का समापन हो गया पर
लालिमा अनुपस्थित है,
रिश्ते ऐसे हो गए हैं,
जैसे मूर्तियाँ हो कांच की,
गुमसुम, उन्मन, एकांत,
दर्द और हृदय शांत
भोर के उजाले का इंतज़ार है।

हर व्यक्ति हवाओं में ही
व्यक्तव्य देने को आतुर है,
हृदय के आघात में औषधि लेपने की
नाकाम कोशिश करती
समय के अंतराल में,
भविष्य को ढूँढ़ती यह चाह
दूर और दूर जा रही है,
भोर के उजाले का इंतज़ार है।

समय के आईने में भी नकली चेहरा सुप्त है,
भूत और भविष्य के बीच वर्तमान लुप्त है,
मानसिकता विचारों से ऊपर उठ गयी है
रात्रि का अँधेरा
सुबह के कोहरे में विद्यमान है,
अंतस की टीस हथेली पर चलायमान है,
भोर के उजाले का इंतज़ार है॥

❖

81. रात उतर रही थी

रात उतर रही थी
तारे डूबने लगे
अरुणिमा लिए सूरज का प्रकाश
तृण पत्तियों पर
ओस की बूंदों को
मोती होने का अहसास दिला रहा था
और दूर एक छोटी सी झोपड़ी में
नयी सुबह को
पाने के इंतज़ार में
वह
फिर विश्वास की बाती में
आशा की लौ
छोटे से दीप पर
जलाये बैठा था,
एक विश्वास
हौसलों से भरा
उम्मीदें हरी भरी
भविष्य बच्चों का
आज की रोटी प्रश्न
कल का दुःख भूलता
पर भाग्य बदलेगा...
रात का अँधियारा उतरेगा।

❖

82. रेत की आकृतियाँ

समंदर के तट पर
रेत की आकृतियाँ
कितनी सजीव
कितनी बोलती सी होती हैं
मानो उठकर रेत के बने
घरौंदे में जा बसेगी
और
समंदर की लहरें
धीरे धीरे आकृतियाँ को
अपने में समेट लेती है
और रह जाता है
एक अजीब सा मौन
एक पहचान
किसी कलाकार ने
यहाँ एक आकृति उकेरी थी
पुनः अंतराल में वह चिह्न भी
लुप्त हो जाता है;
अगर आकृति अविस्मरणीय हो
तो यादें रह जाती हैं।
एक रेत की आकृति हम हैं
किसी कलाकार की रचना
हमारा भी अस्तित्व लुप्त हो जायेगा

जब लहर एक आयेगी,
बस रह जायेंगे निशाँ
गर कर्मों के फल अच्छे होंगे तो
नहीं तो निशां भी मिट जायेंगे धीरे धीरे
समुद्र की गहराई में रेत के टीलों की भांति
समा जायेंगे गर्त में
उठो जागो
कर्मों को स्थायित्व देने हेतु
सन्मार्ग पर कदम बढ़ाओ धीरे धीरे॥

❖

83. लकीरें

लकीरें
कहीं भी हों
कुछ कहती हैं
मस्तक की लकीरें
वेदना और अवसाद दर्शाती हैं
हाथ की लकीरें भरमाती हैं
सूने कागज़ पर खिंची लकीरें
एक इतिहास रचाती हैं
हृदय पर अगर पड़ जाएँ लकीरें
दर्द का आभास कराती हैं
कुंठित मन उन्मन हो तो
यही लकीरें मार्ग बताती हैं
कई होते हैं लकीर के फ़कीर
कोई के शब्द होते पत्थर की लकीर
साँप गुजर जाए और कई पीटते लकीर
लकीर अंततः लकीर हैं
सब कुछ बोलती लकीर
पर मेरे दोस्त
लकीरों के भरोसे न रह
भाग्य लकीरों से ही नहीं होता
जिनके लकीरें नहीं होती
उनकी भी होती है तकदीर
सब कुछ बोलती लकीर॥

❖

84. टूटे रिश्ते

वक्त की दीवारों पर लगे
दाग कभी मिटते नहीं
कोशिशों के बावजूद भी
टूटे रिश्ते
वैसे जुड़ते नहीं,
रिश्तों का सम्बन्ध
जिंदगी की राह में कठिन होता है,
समंदर में तूफानी लहरें हो
और उस पार छाई हो काली घटायें
बदरी की कालिमा में
चाँद हो गया धूमिल हो
उस पार जाना हो
लक्ष्य को पाना हो
तो
कैनवास पर सब कुछ मिटा कर
नया मुस्कराता चाँद बनाना होगा
रिश्तों को सदा मधुर बनाना होगा
जिंदगी को जिंदगी बनाना होगा।

❖

85. शाद्वल

दूर दूर तक
रेगिस्तान में नज़रें दौड़ती हैं
और खोजती है जल की बूंदों को,
मृग मरीचिका सी,
पा जाये अगर शाद्वल कहीं तो
स्वर्ग सी अनुभूति होती है,
रेत की अखंड राशि
थकते नयन मृग-तृष्णा
ये मरू-उद्यान
हृदय के लंबे छालों को ठंडक देते से
कोई आहत छुपाने को कसक अपनी,
मुस्करा रहा हो जैसे
दिल में छुपा के दर्द विरह का
गीत गुनगुना रहा हो प्रीत के जैसे
रेतों की उड़ती धूल में
गर्म हवा के झोंकों में थका सा राही
जीवन विश्राम का सुखद अनुभव
काश आगे की राह भी
हो सरल-विरल
जख्म भरें हो
मुस्कराहट सच्ची हो
गीत सुरीले निकलें हों अंतर्मन में
न रेतीली आंधी,
न तृष्णा, न कसक
बस उत्साह आये तन में।

❖

86. शिव को पुनः नील-कंठ बनाना होगा

पूर्ण करने को तेरी आराधना,
सफल करने को तेरी प्रार्थना,
प्याला विष का पीना होगा,
शिव को पुनः नील-कंठ बनाना होगा,
विचारों में परिवर्तन लाना होगा।

अलख क्रांति की तुम्हें जलानी होगी,
भागीरथ प्रयत्न कर,
चीर ह्रदय हिमालय का,
मंदाकनी त्याग-प्रेम-उत्थान की बहानी होगी।

क्यूँ आज हुआ जा रहा अधीर,
धीर हो तुम, वीर हो तुम,
निष्ठा-वान तुम, ज्ञान वान तुम,
विश्व विजयी भारत की तुम तकदीर।

परिवर्तित स्वप्न नयन में विचर रहे,
परिवर्तन तो निज ख्यालों में लाना होगा,
उधार के सपनों को छोड़
स्वयं के सपनों को सजाना होगा,
शिव को पुनः नील-कंठ बनाना होगा,
विचारों में परिवर्तन लाना होगा।

❖

87. शून्य से शून्य तक

शून्य से शून्य तक
प्रारम्भ से अंत तक
चला कंटीले मार्ग पर
सोया फूलों की सेज पर भी
बालुका राशि पर लिखी जिंदगी
और फिर इसे धोती लहरें
जीवन के लम्बे अंतराल का
समय के इस कालाघात का,
अनुभव कराती
सागर की गहरी जल राशि,
ऊपर से शांत
अन्दर से उद्वेलित
विष भी इसी में
अमृत भी इसी में।

यत्न सहस्त्रों किये
क्या खोया क्या मिला
लंबी डगर की यात्रा
टेढ़ी मेढ़ी
निर्दिष्ट पथ से बिखरती
आशाओं के शब्द से संवरती
विचित्र जीवन यात्रा

अनमोल क्षणों को आँचल में सहेजती
दुःख को कुरेदती
यही तो है सत्य
सत्य जो पूरा भी है
अधूरा भी है
जीवन यात्रा के सन्दर्भ
उपलब्धियों का आंकलन
शून्य से प्रारंभ यात्रा
शून्य पर समाप्त ॥

❖

८८. सत्यता परा-जगत की

सत्यता परा-जगत की
अन्तर्निहित भावों का प्रदर्शन निकृष्ट
अनाचार भ्रष्टाचार अत्याचार अभीष्ट
पञ्च दोषों से व्यक्ति निर्दिष्ट।

अपरिहार्य है पञ्च दोषों से मुक्त होना,
पञ्च दोष
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह
आकर्षण विकर्षण का संकर्षण
न पराजित छोह
न पराजित विछोह।

कबीरा की
काजल की कोठरी
दोषानुगत विकृतियों से समाहित
जगत में साधू ही रहे स्वच्छ
कल्माष लगे ही लगे
जो रहे इस काजल कक्ष।

❖

89. सम्बन्ध

सम्बन्ध
उद्वेलित होते तो हैं,
जब उन्हें कुरेदा जाता है,
जब उन्हें
लांछित किया जाता है।

सम्बन्ध
एक लिखी हुई पुस्तक होते हैं
कोरा कागज
तो कदापि नहीं
जितना पढ़ेंगे उतना समझेंगे
पढ़ने के पश्चात्
पूछने की आवश्यकता नहीं,
समझने की अनिवार्यता नहीं,
सम्बन्ध अपने आप
खुलते चले जाते हैं,
जीवन मौन शून्यता नहीं।

संबंधों का आधार
प्रेमानुभूति होती है
आधार हीन सम्बन्ध
सम्बन्ध नहीं होते हैं

एक विवशता होते हैं,
एक समायोजनता होते हैं,
निःस्पृह सम्बन्ध
आवेशित भावनाओं के द्योतक हैं
सार विहीन भाषों का उद्घोषक है।

संबंधों की प्रगाढ़ता
संबंधों की गूढ़ता
निर्भर करती है स्वाध्याय पुष्टि पर
निर्भर करती है आत्म तुष्टि पर।

आओ संबंधों को रोचक बनाएं
प्रेम अमिय घन बरसायें
निस्वार्थ भाव को दर्शायें।

❖

90. हर दूसरा दिन

हर दूसरा दिन
पहले दिन का अनुसरण करता है,
पर न जाने क्यूँ,
बहुत अलग अलग सा होता है।

चन्द्र कलाएं भी हर रोज़ गगन पर दिखती है,
परन्तु हर रात ये भी
घटती बढ़ती रहती है।

जलधि में प्रति दिन,
बारम्बार लहरें उठती है,
पर कभी शांत मनोरम
तो कभी गर्जन करती हैं।

आसमां भी हमें हर दिन एक सा दिखता है,
कभी वो मेघाच्छादित
तो कभी नील सरल होता है।

पवन भी हर दिन चलती है
कभी शीतल तो कभी आंधी बन मचलती है।
प्रकृति-सम, ऊँच नीच से भरपूर
ही जीवन होता है,
जो इसे समझ जाये
वो ही मानव होता है।

❖

91. सीख

मित्र ही करें जब विश्वासघात
तब भीषण आघात तो होता ही है
आघात बहुत दुखदायी,
हृदय पीड़ित करता ही है
सबल बना हृदय को,
हृदय पीड़ा पीना सीखो।

बिगड़े हो जब खुद के हालात
तब जमाना परिवर्तित होता ही है
बदले परिवर्तन से तो,
मन छिन्न होता ही है
मनोबल कर ऊँचा,
इन हालात में जीना सीखो।

स्व-जन जब ना रखे मान
तब स्वाभिमान व्यथित होता ही है,
स्वाभिमान कर देता है चीर-चीर,
निज विश्वास को,
धैर्य रख धरा सा,
विश्वास को फिर से सीना सीखो।

❖

92. हृदय के वातायन तो खुल गए

हृदय के वातायन तो खुल गए
शूल चुभे थे वे भी भूल गए
तन्तु प्रेम का टूटा था तो भी
दाग सारे क्लेश के धूल गए।

चमत्कार यह कैसे हुआ है
क्षत थी आशा औ मन छुआ है
अवनि तल पर गुंजित प्रेम लय
नभ अगोचर, अंतस धुंआ है।

शांत शांत अधीर मन हो कान्त
अवशेष द्वेष के हुए सब शांत
अधिकारों के बंधन टूटें तब
होता व्याकुल क्यूँ न हो क्लांत।

आशाएं उद्दीप्त, संबल बांहों का
नयन अश्रुपूरित उत्कर्ष चाहों का
सफल जीवन साधना लक्ष्य हुवा
अनुराग विशेष सार्थक आहों का।

❖

93. हरो दुर्योधनों के प्राण

भ्रष्टाचार एवं अनाचार की अनल में
देश भष्मिभूत हो रहा है,
दूर किनारे बैठा नीरो
चैन की बांसुरी बजा रहा है।
धैर्यवान युधिष्ठर भी आज अधीर हो उठा है,
नारायण देख देख राष्ट्र करुणता रो रहा है।

आ त्रिभुवन नाथ
कर पांचजन्य का शंखनाद
सुप्त अर्जुन की तन्द्रा भंग कर
हो जाने दे दूसरा कुरुक्षेत्र
उठ गांडीव की टंकार सुना
अनाचारियों का संहार सुना,
आर्थिक विध्वंसता से निराकार हो
राष्ट्रीय चेतना का पूर्णाकार हो,
पथ भूल कर जलधर चीत्कार रहा है,
गगन का भानु शांत हो
बादलों की ओट में सीत्कार रहा है।

प्रचंड तेज़ को लौटा दे नाथ
पापाचारी हो जाएँ भष्मसात
विष हीन दन्त हीन सर्प से
भ्रष्टाचार के दानव नहीं मरने वाले

कालकूट गरल भरे विषधर को पूजेंगे
जो अत्याचारियों के प्राण चूसेंगे
प्रभु इस पावन धरा का करो कल्याण
हरो दुर्योधनों के प्राण ॥

❖

94. उधार के सपने

मैंने जो सपने देखे थे
वे मेरे अपने तो न थे
उधार के सपने
जो वर्षों पहले टूट गए
किसी और की आँखों में बस गए।
आज भी पलकों पर तैरते विचरते हैं
कभी रुलाते कभी
कभी निहुरते हैं,
अतीत की बेला में
स्वर्णिम काल की कल्पना में
आज भी सिहर उठता हूँ,
जीवेम शरदः शतं
आकाँक्षाओं को सिमर उठता हूँ।

जिजीविषा ही जीवन है,
सपने न हकीकत हैं
न जीवन की सार्थकता
लक्ष्य निर्धारित करना है
उधार के सपनों को
सजीव करना है
धरा से उठ ऊँचे
गगन को चूमना है।

❖

95. बैलगाड़ी

अपने गंतव्य लक्ष्य को
प्राप्त करती गाँव की सड़कें,
निरंतर घिस-घिस जाती सी
बेपरवाह
बेखबर
न कोई देखभाल,
न कोई उपचार,
बैलगाड़ी की लकीर पीटती
बीच में कूबड़ भी।

कितना सामंजस्य
जीवन का मार्ग भी लाचार,
अतीत को पीटता
भविष्य से बेखबर,
दर्दों का कूबड़ लिए,
घसीटता सा गुजरता,
आतंरिक दुःख को अपने में समेटता,
स्व-उपचार ही सहारा,
धैर्य और साहस के बैलों पर आरूढ़
गंतव्य पहुँचने को तत्पर
व्यक्तित्व को नकारता,
अस्तित्व को तलाशता।

❖

96. कबीर के ढाई आखर

कबीर के ढाई आखर,
जिंदगी से कहीं दूर जाकर,
दुनिया के स्वार्थ में मग्न है।

कालनेमि, रावण, राहु
यथार्थ से प्रतीत हो रहे,
छल प्रपंच ही सर्वज्ञ हो रहे,
महानगर की दौड़ती जिंदगी में,
अपने कहाँ खो रहे।

वक्त सिमट कर छोटा होता जा रहा है,
और हम सिकुड़ कर
संबंधों की हदें पार कर
एक कूप मंडूक हो गए हैं
साथ ही हो गये है डोलती नैया से
जो तूफ़ान में किनारा ढूंढ़ रही हो।

इंतज़ार है कभी तो कोई आएगा,
गायेगा गीत,
मधुर प्रकृति के, मधुप-पुष्प के,
क्षितिज की लालिमा के,
मुखर जल राशि के पार होती नैया के
नव-रस संचारित होगा
ढाई आखर कबीर का,
कब हर दिल में प्रस्फुरित होगा।

❖

97. दिल कहे वह है परेशां-परेशां

गिरते फूल डाली से चुन इन्हें देता माली पहचां
अपने बिछड़ जाएँ तो क्यूँ टूट जाते दिल के अरमां
दिल कहे वह है परेशां-परेशां।

देख रहा तुझे नफ़रत भरी निगाहों से कैसे इंसा
देखो क्यूँ जल रहा मोहब्बत भरा अलमस्त आसमां
दिल कहे वह है परेशां-परेशां।

तपती धरती पर सुख के दो बूंद झट से उड़ते यहाँ
लम्बे दुःख के तो जाते-जाते ही जाते हैं निशाँ
दिल कहे वह है परेशां-परेशां।

❖

98. रिश्ते

कुछ रिश्ते
बन कर आते हैं
कुछ रिश्ते बनाये जाते हैं,
अहमियत तो
उनकी है
जो रिश्ते
कमाए जाते हैं।
रिश्तों में संवेदना हो तो
रिश्ते कमाए जाते हैं,
रिश्तों में अहैतुकी भावना हो तो
रिश्ते कमाए जाते हैं,
रिश्तों में अनुशीलता हो तो
रिश्ते कमाए जाते हैं
रिश्तों में गतिशीलता हो तो
रिश्ते कमाए जाते हैं।
प्रगाढ़ता रिश्तों की
रिश्तों के नाम से नहीं होती,
हज़ारों भाई भाई को लड़ते भिड़ते देखा है,
कौरवों पांडवों को कटते मरते देखा है,
पांच पतियों की पत्नी
जुए के दांव पर लगाई जाती देखी है
अहिल्या को पत्थर बनायी जाती देखी है
भक्त-भगवान के अहैतुकी रिश्ते शबरी-राम होते हैं,
संवेदना से अश्रु सिंचित रिश्ते सुदामा-श्याम होते हैं,

रिश्तों को दौलत के तराजू पर तौलने वालों
रिश्ते कभी बिकते नहीं
ये शाश्वत होते हैं,
ये धर्म होते हैं
ये अवर्णनीय स्फुलित सृजन होते हैं
ये मंदिर की उपासना के अर्चन होते हैं।
पर्वतों को चीर
बहती सरिता रिश्तों का उद्गम होती है,
मंदिरों की घंटी की टंकार
रिश्तों का संगम होती है।

❖

99. मैं दीवाना, मैं प्यार निभाता चला

मैं दीवाना, प्यार निबहाता चला
बादलों को दीए से गलाता चला॥

शाखों पर कलियाँ जब खिल खिल आई
जीवन बगियाँ में जब वे लहराई
तब गीत ख़ुशी के मैं गाता चला
मैं दीवाना प्यार निबहाता चला॥

आहों में दर्द बढ़ा तब मुस्काया
खींच नदिया दरिया तक पहुंचाया
दर्द ग़ालिब बन ग़ज़ल बनाता चला
मैं दीवाना प्यार निबहाता चला॥

ये प्रीति ये अनुभूति मेरा धर्म है
शाश्वत पूजा है हृदय का मर्म है
कर वंदन जनम अमृत बनाता चला
मैं दीवाना प्यार निबहाता चला॥

साँसों साँसों में उष्णता प्रीत की
भावों भावों में चुभन जग रीत की
बैठ किनारे तुझे अपनाता चला
मैं दीवाना प्यार निबहाता चला॥

मैं दीवाना प्यार निबहाता चला
बादलों को दीए से गलाता चला॥

❖

100. जीवन के दिन बीत रहे

जीवन के दिन बीत रहे न जाने चैन मिले कहाँ
कब केसर-क्यारी महके न जाने फूल खिले कहाँ।
अमावस की रात घनघोर छा रही
क्यूँ हृदय की तड़पन बढ़ती जा रही
क्यूँ रह रह विगत की याद सता रही
क्यूँ लालसा देह पर हक़ जता रही।

हृदय के अवसाद बढ़े तो रुके ये सिलसिले कहाँ
जीवन के दिन बीत रहे न जाने चैन मिले कहाँ।
जीवन भर थी मुझको तलाश जिसकी
खामोशियाँ सदा रही पास उसकी
हर खुशनसीब लम्हों की आस सबकी
आज तो विकट है मिलन प्यास उसकी।

मेरी अंतस की पीड़ा के दुर्मिल स्वर मिले कहाँ
जीवन के दिन बीत रहे न जाने चैन मिले कहाँ।
अंतः समर्पित संज्ञान मिला मुझको
हर याम कर्तव्य ध्यान मिला मुझको
कहा अधिकार तो ज्ञान मिला मुझको
समर्पण था क्यूँ न मान मिला मुझको।

जीवन के दिन बीत रहे न जाने चैन मिले कहाँ
कब केसर क्यारी महके न जाने फूल खिले कहाँ॥

❖

101. मेरा जीवन सूखे पत्ते सा...

मेरा जीवन सूखे पत्ते सा उड़ उड़ बिखर चला
पतझड़ का मौसम है यह न जानें किधर किधर चला।

क्षत आशा हुई क्या मन बन धुंआ नभ पर छा गया
प्रेमगीत गुंज न सका अवनि तल पर आ टकरा गया
प्रभात के प्रथम प्रहर में, बची है कल्मष की छाप
हृदय आहत है औषधि लेपना भी बना अभिशाप।

पीड़ित आशाओं को दे वेदना पुनः ठहर चला
मेरा जीवन सूखे पत्ते सा उड़ उड़ बिखर चला।

पतंग की डोर थामी थी न जाने कौन तोड़ चला
रुख हवा का था विपरीत साथी भी मुझे छोड़ चला
निकुंज में सरोज खिला ही था कि अलि मुख मोड़ चला
अहो! दे वेदना जीवन भ्रमर मकरंद निचोड़ चला।

वेदना सुखद सपन बनी, नैराश्य बन भ्रमर चला
मेरा जीवन सूखे पत्ते सा उड़ उड़ बिखर चला।

माना जीवन एक किनारा है लहरें आती जाती है
इन लहरों सा आता सुख दुख तो जीवन साथी हैं
कभी कलकल निनाद, कभी झंझा बन टकराता है
क्या सोचे हैं समय ही इन दुखों को भर पाता है।

भूत भविष्य वर्तमान की सोच से उठ ऊपर चला
मेरा जीवन सूखे पत्ते सा उड़ उड़ बिखर चला।

❖

102. सागर के निकट रहें तो भी, बुझती नहीं प्यास

सागर के निकट रहें तो भी, बुझती नहीं प्यास,
गगन मध्य विचरते लगा कर, बादलों से आस
मान करते वे जुगनुओं का, आभा पाई पास
मिल न पायेगा ध्येय अपना, जो हैं शशि प्रकाश।

दिशा हीन भटक ढूंढ़ते वे, झूठी आस अर्श
सार्थक जीना उसका क्या है, न जीवन उत्कर्ष
बीच पथ से मुख मोड़ करते, निरन्तर संघर्ष
निश्चय पाते मंजिल वे ही, जो एक आदर्श।

निरन्तर बनो गति शील रहे, कितने बिछे शूल
शूल भी हों फूल विचार हों, यदि ध्येयानुकूल
वारिद बूंदें लाती मोती, जा जलधि के मूल
सकारात्मक बनकर बढ़े चलो, कठिनाइयाँ भूल।

कर्म करो यही तो धर्म है बताएं श्री कृष्ण
नियति है परीक्षा देनी है सीखो बन सतृष्ण
अंतस में बैठे अ-ज्ञान को, करो भी अब दूर
हारी बाजी पलटने हेतु, कर इसे मजबूर।

❖

103. आओ आज टूटे सपनों को ढूंढ़ते चलें

आओ आज टूटे सपनों को ढूंढ़ते चलें
मन नैराश्य को ले जिंदगी से झूझते चलें।

वादा तो किया था निशा को साथ ले चलेंगे
भोर से पहले चाँद हथेली पर ले बढ़ेंगे
चाह बहुत थी नव विचारधारा अनुपम होगी
प्रीत की गंगा बहेगी उत्थान प्रगति होगी।

उन्नत शिखर की और पहले दो कदम उठेंगे
जागृति के पंछी उच्च मुंडेर पर बैठेंगे
आओ आज टूटे सपनों को ढूंढ़ते चलें
मन नैराश्य को ले जिंदगी से झूझते चलें।

भोर के इंतज़ार में कोह में जलता दीपक
बुझ गया लड़ता हुआ वह तूफान से सुबह तक
तिमिर को करने दूर चला था पर यह क्या हुआ
आंधी चली बुझ गया हसरतें हुई धुंआ धुंआ

उन्नति प्रगति सोच सब कुछ समां गयी सपनों में
स्वप्न न आये उषा के आगमन तक अपनों में
फिर से नया ख्वाब सजाना है आओ मिल चलें
अंतस नैराश्य को जीवन से निकाल खिल चलें।

❖

104. जरा मुस्कुराइये ग़मों को भूल जाइये

मुस्कराइये जरा मुस्कुराइये ग़मों को भूल जाइये
मधुर संगीत प्रकृति के मस्ती में गाइए बजाइये।

भरे शूल हैं जीवन में तो क्या राह में फूल बिछाइये
लाली लिए डूबता उगता है सूरज सब को बताईये
धूप-छाँव का खेल निराला, ना कभी कदम डगमगाइये
हो रहे दूर रिश्ते जग में, आप दिलों को पास लाइये।

मुस्कराइये जरा मुस्कुराइये ग़मों को भूल जाइये
मधुर संगीत प्रकृति के मस्ती में गाइए बजाइये।

राग द्वेष जीवन में हैं बहुत, मधुर रिश्तों को बनाइये
रोशन निज घर को किया औरों के घर भी दीप जलाइये
दुःख तो साथी दूर तक के, इनको साहस से हटाइये
काँटों में रह छोड़े न फूल महक, बस जीवन महकाइये।

मुस्कराइये जरा मुस्कुराइये ग़मों को भूल जाइये
मधुर संगीत प्रकृति के मस्ती में गाइए बजाइये।

हो अशांत चित्त कुविचार सताए, प्रभु गुण गाये जाइये
उसने है दिया न की कमी कोई शुक्र उसका मनाइए
बहुत दिया ईश्वर ने आपको, जग को सुरभित कर जाइये
मन हो दुःखी तो किसी दीन की कुटिया में चले आइये।

मुस्कराइये जरा मुस्कुराइये ग़मों को भूल जाइये
मधुर संगीत प्रकृति के मस्ती में गाइए बजाइये।

❖

105. आह्लादित करने हृदय-दीया है तैयार

निसर्ग के उत्कृष्ट प्रांगण में सत्य का दीया
ज्योतिर्मय अंतस कर रहा वह स्नेहिल दीया
अवसादित मन होता देख असत्य संसार
आह्लादित करने हृदय-दीया है तैयार॥

झंझा से डगमगा सकती नहीं यह ज्योत
संकल्प बल है भावनाओं से ओतप्रोत
देह तो मिथ्या, फिर भी अभिमानित क्यूँ मन
देव श्रुति है असत्य त्याग, कर सत्य का वरण॥

मार्ग हो शूल आच्छादित या हो तिमिर गहन
पग-पग अति संकीर्ण धरा उगले अनल तपन
व्योम के कपाल से निशिकर ऊर्जा कर संचित
प्रफुल्लित तन प्रशांत मन बाधा न हो किंचित॥

❖

परिचय

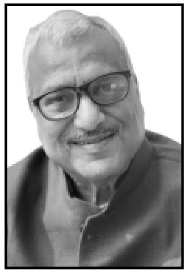

सुरेश चौधरी 'इंदु'

पिता का नाम : स्व. भोलाराम चौधरी
माता का नाम : श्रीमती दुर्गावती चौधरी
जन्म स्थान : जमशेदपुर (वर्तमान में झारखंड)
जन्म तिथि : 14 जुलाई, 1952

शिक्षा : विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद; (BSc, FCA, PhD) आरंभिक शिक्षा जमशेदपुर भारतीय मोडल स्कूल कक्षा 7 तक, फिर ADLS हाईस्कूल में मैट्रिक 1963-1967, फिर जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज से विज्ञान में स्नातक (1967-1971)। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स कोलकाता (दास एंड प्रसाद) से चार्टर्ड (1972-1976)।

जीवन वृतांत : 1977-1982, उषा अलॉयस एंड स्टील्स में मैनेजर फाइनेंस के रूप में कार्य। 1982-83 बिहार अलॉइ स्टील्स लिमिटेड में वाइस प्रेसीडेंट कमर्शियल। तत्पश्चात् निजी इस्पात एवं इस्पात से संबंधित कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये। 2008 से 2011 तक आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्य किया।

लेखन में रूचि 2011 से स्वास्थ्य के चलते। सभी कार्य छोड़कर केवल अध्ययन एवं लेखन की ओर झुकाव, तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य। लेखन में विशेष कर-हाइकु, मुक्त छंद, छंद मुक्त, छंद, बाल कविता, आलेख, आध्यात्म, शोध वैदिक सनातन दर्शन एवं आर्थिक विषय पर। भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखों एवं कविताओं का नियमित प्रकाशन, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉग अकेदेमिया, एडु में नियमित लेख प्रकाशन।

'ताजा टीवी' एवं 'दूरदर्शन' पर समय-समय पर चर्चाओं में भागीदारी।

अनुवादित कार्य का विवरण

1.1 श्री दुर्गतिविनाशनी : श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद छंद मुक्त लयबद्ध जिसकी विवेचना महामंडलेश्वर साक्षी जी महाराज एवं प्रसिद्ध साहित्य समीक्षक श्री वीरेन्द्र गोस्वामी, जयपुर ने लिखी। पुस्तक के दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

1.2 प्रांजलि (भाग-2) : श्रीमद्भागवत एवं वेदों के 101 सूक्तों पर आधारित छंद मुक्त प्रार्थनाएँ, समीक्षा डॉ. उम्मेद सिंह बैद, पुस्तक में प्रार्थना के साथ उधृत श्लाकों की संख्या भी दी गयी है।

1.3 वेद से वेदांत तक-मूल पाठ सहित : 9 उपनिषद : ईशोपनिषद्, केन उपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्न उपनिषद, मंडूक उनिपद, मांडूक्य उपनिषद, ऐतरिय उपनिषद, तैतरीय उपनिषद, श्वेताश्वेतर उपनिषद का छंद मुक्त काव्यात्मक अनुवाद, पुरुष सूक्त एवं नासदीय सूक्त का छंदोबद्ध अनुवाद।

समीक्षा : अंशु त्रिपाठी, प्रसिद्ध कवयित्री, डॉ. अल्पना गोस्वामी, विभागाध्यक्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग।

1.4 आदिशंकर रसमाधुरी :

मूल संस्कृत पाठ के साथ : आदि शंकराचार्य के निम्नलिखित स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद

1. भजगोविंद : चौपाई एवं दोहों में अनुवाद
2. महिषासुर मर्दिनी : कनक मंजरी छंद
3. देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् : हरिगीतिका छंद में
4. निर्वाण षटकम : कुकुम्भ छंद में
5. श्री गंगा स्त्रोत : लावणी छंद में अनुवाद
6. कनकधारा स्त्रोत : मूल छंद में

आशीर्वचन प्रसिद्ध गौ भक्त संत एवं रामजन्मभूमि के प्रमुख आचार्य धर्मेन्द्र द्वारा।

1.5 हर हर महादेव : मूल संस्कृत पाठ के साथ मंत्रों एवं स्त्रोतों का छंदोबद्ध अनुवाद :
विषय की विषद व्याख्या स्व-लिखित

1. शिव स्तुति-स्व-रचित संस्कृत में
2. महामृत्युंजय मंत्र : धनाक्षरी में
3. शिव पंचार मंत्र : चतुष्पदी में
4. द्वादश ज्योर्तिलिंग : चतुष्पदी में
5. रावण रचित शिवताण्डवस्तोत्रज़

यह स्त्रोत अनंग शेखर छंद में लिखा गया है, इसे इसी छंद में अनुवाद किया है।

6. श्री शिव महिम्न स्तोत्र : चतुष्पदी एवं लावणी छंद
7. रूद्राष्टक (तुलसीदास रचित) : चतुष्पदी में
8. शिव मानस पूजा स्त्रोत : षष्टपदी में आशीर्वचन आचार्य धर्मेन्द्र जी एवं बालव्यास जी द्वारा

1.6 सुभाषितम : मूल संस्कृत श्लोकों सहित भारतीय नीतिशास्त्र एवं विभिन्न सुभाषित 108-108 श्लोकों की दो माला का दोहों में अनुवाद।

1.7 गोपी गीत : यूँ तो गोपी गीत 19 श्लोकों का एक गीत जो इंदिरा छंद में लिखा गया है, परंतु यह गहन शोध का विषय है एवं प्रत्येक श्लोक अध्यात्म की ऊँचाई की छूता दृष्टिगत है। इसका अनुवाद भी इंदिरा छंद में ही किया है और विस्तार और विस्तृत भाष्य विभिन्न छंदों में है। यह एक खंड काव्य है।

1.8 सुर तरिंगिणी : देव सरिता माँ गंगा की समस्त कहानी एवं संस्कृत मूल के साथ गंगा लहरी, गंगा स्त्रोत, गंगाष्टकम (कालिदास, आदिशंकर, वाल्मीकि द्वारा रचित) का छंदों में अनुवाद, गंगा का अवतरण हुआ है तो क्या हुआ होगा व्यवहारिक दृष्टिकोण।

1.9 अप्रकाशित : भागवत में वर्णित अनेक गीतों एवं स्तुतियों जैसे, भ्रमर गीत, वेणु गीत, वर्षा गीत, कुन्ती द्वारा स्तुति, गर्भ स्तुति, गज मोक्ष मंत्र आदि का मूल संस्कृत पाठ सहित विभिन्न छंदों में अनुवाद।
विवरण इस प्रकार है :-

क्रम	सूक्त/गीत/स्तुति वेदों से	मूल छंद	अनुवाद का छंद
1.	पुरुष सूक्त	निचृदनुष्टुप	चतुष्पदी
2.	नाशदीय सूक्त	नीचृत्रिष्टुप	चतुष्पदी
3.	हिरण्यगर्भ सूक्त	त्रिषटुप	लावणी
4.	संज्ञान सूक्त	विराननुष्टुप	गीतिका
5.	श्री सूक्त	महा जगति	हरिगीतिका
	भागवत के गीत/स्तुति		
6.	भ्रमर गीत	शार्दूलविक्रीडीत	हरिगीतिका
7.	वर्षा गीत	वसांततालिका	दोहा-चौपाई
8.	यूगल गीत	स्वागता	स्वागता
9.	वेणु गीत	वंशस्थ	हरिगीतिका
10.	प्रणय गीत	उपेन्द्रवज्रा	कुकुम्भ
11.	धुन गीत	वसंततालिका	कुकुम्भ
12.	गजेन्द्र मोक्ष	स्तरगधरा	दोहा-चौपाई
13.	कुंती स्तुति		चतुष्पदी
14.	वसुदेव स्तुति		चतुष्पदी
15.	गर्भ स्तुति		धनाक्षरी
16.	चतुर्शलोकी भागवत		धनाक्षरी
17.	अन्य: कृष्णाष्टकम	पैंचचामर	पैंचचामर

अन्य भाषा से अनुवाद

2.10 अड़सठ शरद रवीन्द्र की शरण : रवीन्द्र के मूल 68 बंगला गीतों को देवनागरी में लिखकर अनुवाद प्रथम अनुवाद है, जो छंदबद्ध है। अभी तक जितने भी अनुवाद हुए हैं, वे सब छंद मुक्त अतुकांत या तुकांत अनुवाद ही हुए हैं। इसकी समीक्षा प.बंगाल के पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी जी, कलकत्ता विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. राजश्री शुक्ल, प.बंगाल शिक्षण विश्वविद्यालय की उपकुलपति डॉ. सोमा बंदोपाध्याय एवं पं. सुरेश नीरव ने की है।

अध्यात्म एवं धर्म पर आधारित पुस्तकें

3.11 भारतीय दर्शन : भारत के मुक्त 6 दर्शनों का परिचय। इसमें सनातन धर्म के आस्तिक दर्शनों की प्रारंभिक जानकारी है।

3.12 भारत की अन्य दर्शन : भारत के अन्य दर्शन जिन्हें नास्तिक दर्शन कहा गया है। उनके बारे में प्रारंभिक जानकारी, ये दर्शन जैसे चवार्क, बुद्ध, जैन दर्शन हैं।

3.13 वेदान्त : आदि शंकराचार्य द्वारा चार धामों के चार महावाक्य की विस्तृत चर्चा, जिसकी भूमिका लिखी है दर्शन के महाज्ञानी डॉ. उम्मेद सिंह वैद ने।

3.14 श्रीमद्भागवत महापुराण-परिचय एवं समीक्षा : श्रीमद्भागवत को पंचम वेद भी कहा गया है पर आजकल हर गली-मोहल्ले में हम भागवत के पाठ पर फिल्मी तर्ज के गानों पर लिखे भजनों पर नृत्य देखते हैं। एक व्यवहारिक दृष्टि से भागवत की समीक्षा की गई है, इसमें भागवत कथा के बारे में नहीं बल्कि उसके लिखने के उद्देश्य के बारे में बताया गया है।

3.15 वेदों का परिचय एवं समीक्षा : चार वेद क्या है। इनमें क्या विषय वस्तु है। इनका भाष्य किसने-किसने लिखा है। उन भाष्यों में क्या है। समुचित जानकारी जिसे एक हिन्दू को ही नहीं बल्कि विश्व के हर प्राणी को जानना आवश्यक है।

3.16 मनुस्मृति-परिचय एवं समीक्षा : कालांतर में मनुस्मृति को अभिशाप घोषित कर दिया गया है, जबकि यह हर भारतीय की और भारतीय संस्कृति की रूलबुक है। इसमें जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कारों के निर्वहन का नियम बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रेक्षप मंत्रों एवं शंकाओं का निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

3.17 भ्रम और भ्रांतियाँ : सनातन धर्म में व्याप्त भ्रम जैसे दलित का शोषण 5000 वर्षों से हो रहा है इत्यादि का तथ्यपरक उत्तर, कई भ्रांतियाँ दूर होंगी इसे पढ़ने से।

शोध पुस्तक

3.18 चमत्कृत करती भाषा संस्कृत : संस्कृत कितनी चमत्कारी भाषा है, उसके हर पहलू पर क्रमश: आलेख लिखे थे, उनका संग्रह इस पुस्तक में है।

काव्य

4.19 तिमिर ढलेगा : आशाओं को जागृत करती 101 प्रेरक कविताओं की पुस्तक जिसका तीसरा संस्करण छप कर आ चुका है।

4.20 बुलबुले-सी जिंदगी : 101 छंद मुक्त कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखी हुई, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध गीतकार रमेन्द्र मोहन त्रिपाठी एवं प्रसिद्ध लेखक शिखर चंद जैन ने लिखी है, पुस्तक का दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

4.21 कुछ माणिक कुछ मोती : प्रांजल हिन्दी में रचित छंदबद्ध कविताएँ अलग-अलग विषय पर क्रमबद्ध, समीक्षा प्रख्यात गीतकार श्री विष्णु सक्सेना, श्रीमती सरिता शर्मा एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने लिखी हैं, पुस्तक आर्ट पेपर पर बहुरंगी है।

4.22 प्रांजलि : जीवन दर्शन पर आधारित 101 प्रार्थनाएँ, छंद मुक्त, समीक्षा वीरेन्द्र गोस्वामी, सर्वेश अस्थाना एवं भागवताचार्य पं. श्रीकांत शर्मा बालव्यास जी ने लिखी है। पुस्तक के दो संस्करण आ चुके हैं।

बाल गीत

4.23 आसमान को छू लें : जयपुर के कल्याण सिंह शेखावत के संग यह बाल गीत की पुस्तक बहुरंगी बड़ी साइज में बालकों को मोहती बनी है, जिसकी समीक्षा प्रसिद्ध बाल लेखक संजय जायसवाल 'संजय' एवं आकाशवाणी, कोलकाता की उद्घोषिका सविता पोद्दार ने लिखी है।

अन्य काव्य

4.24 हे माँ : कुल देवी शक्ति स्वरूप माँ जीण भवानी को समर्पित पुस्तिका जिसमें संस्कृत स्तुति से आरंभ कर के 18 सनातन छंदों की रचनाएँ लिखी गई है।

4.25 माँ : मेरी जननी को हर वर्ष काव्याञ्ली देता रहा हूँ, उनके देहावसान पर समर्पित पुस्तिका, जिसमें 20 गीत छंद बद्ध एवं छंद मुक्त दोनों है।

4.26 शून्य से शून्य तक : दृश्य बनाते हुए 81 कविताएं जो जीवन के विभिन्न आयामों पर लिखी गई है, ये कविताएं छंद मुक्त ले बद्ध है।

विविध

5.27 मूल्यांकन : भारतीय अर्थव्यवस्था का आंकलन 2019 में इसे स्व. विलास राव जी के सहयोग से लिखा था। भारत अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर गहन चिंतन आंकड़ों के साथ एवं सुझाव प्रधानमंत्री कार्यालय भेजे गए, जिसमें कई सुझावों को मंजूरी मिली।

5.28 भारत की आर्थिक स्थिति में क्या उचित (प्रकाशनाधीन) : समय-समय पर भारतीय अर्थव्यवस्था पर लेख लिखता रहा हूँ। नोटबंदी का सुझाव भी देने वाले कुछ लोगों में से मैं भी था। इन लेखों को एकत्रित कर पुस्तक का रूप दिया गया है।

5.29 भारतीय काव्य संहिता : भारत में प्रचलित सभी काव्य विधाओं का विवरण लिखने की विधा कैसे लिखें, किन बातों का ध्यान रखें-छंद, छंद मुक्त, मुक्त छंद, हाइकु, गीतिका, गज़ल इत्यादि।

यात्रा संस्मरण

5.30 ऐक्सडेनल टूर इन हाइबेरनेसन : यात्रा संस्मरण, लेख की अनियोजित यात्रा के 7 माह जिसमें उसने पूरे भारत का भ्रमण किया। उन भ्रमणों का रोचक विवरण ललित निबंध रूप में। पुस्तक निखिल प्रकाशन आगरा से प्रकाशित।

संवत 2081 में प्रकाशित

5.31 : इंदु प्रभा - छंद बद्ध कविताओं का संग्रह जिन्हें विषयानुसार अनुक्रमित किया गया है।

5.32 : मैं जीवन दंड विधान हूं-नवगीत एवं छंद वद्ध गीतों का संग्रह

5.33 : लघु उपनिषद त्रयी (मांडूक्य, ईश, केन उपनिषद का व्यावहारिक अर्थों सहित भाष्य मूल श्लोक के साथ)

5.34 : इंदु पदावली (कृष्ण भक्ति पद) : 92 कृष्ण भक्ति के एवं 21 राम भक्ति के पद। पद जो एक लुप्त होती विधा है, उसे पुनर्जीवित करने का प्रयास।

5.35 : इंदु पदावली (भाग 2) निर्गुण पद : कबीर, रैदास, दादू इत्यादि संतों की परंपरा को बढ़ाते हुए 95 निर्गुण पद।

5.36 : दोहांजलि, निर्गुण सगुण एवं नीति परक 711 दोहों का अनुपम संग्रह जिसमें 51 दोहे मीतू कनोडिया जी के सौजन्य से समाहित किये गए हैं।

कुछ प्रमुख सम्मान :

1. भारत गौरव (इस्पात में अभूतपूर्व कार्य हेतु तत्कालीन इस्पात मंत्री के कर-कमलों से दिल्ली की एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा।)
2. केंद्रीय सचिवालय द्वारा राजभाषा गौरव पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी जी द्वारा।
3. विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि विक्रमशिला हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा।

4. साहित्य शिरोमणि दामोदरदास चतुर्वेदी साहित्य शिखर सम्मान 2021 एवं 2022 (पूर्व में यह सम्मान अटल बिहारी वाजपेयी, पंडित गोपालदास नीरज, उदप्ताप सिंह जी इत्यादि को मिला है।)
5. श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार साहित्य सम्मान, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन पूर्वी सिंहभूम शाखा द्वारा।
6. साहित्य मार्तण्ड सम्मान प्रसिद्ध संस्था बिहार हिंदी सम्मेलनी, पटना द्वारा।
7. हिंदी साहित्य शिरोमणि मानद सम्मान, साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा।
8. 'हिंदी सेवा सम्मान' श्रवण संस्था व शोध संस्थान, हरिद्वार द्वारा।
9. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' साहित्य रत्न सम्मान सह नगद राशि प्रख्यात संस्था अभ्युदय द्वारा।
10. मानद पीएचडी वैदिक हिंदी साहित्य में लेगॉस यूनिवर्सिटी की शोध इकाई 'इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनस मैनिज्मन्ट एंड रेसर्च टेक्नोलॉजी' द्वारा।

विशेष उपलब्धि : 1116 दिनों में 1000 भजन लिखकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जो कि इंटरनेशनल बुक ऑफ रेकॉड्र्स द्वारा प्रकाशित और प्रमाणित किया गया।

साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधि : अंतर्राष्ट्रीय संस्था रचनाकार (शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन का एक प्रकल्प) के संस्थापक सभापति, संस्था प्रति वर्ष साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु दस व्यक्तियों को सम्मानित करती है एवं नगद राशि भी भेंट करती है।

शुक्तिका इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक न्यासी जो कैंसर पीड़ित असहाय रोगियों के नि:शुल्क चिकित्सा की सुविधा प्रदान करती है।